ISBN: 978-93-340-0099-3

प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्यः वर्तमान परिदृश्य एवं भावी सम्भावनाएं



डॉ0 राजीव अग्रवाल
ज्ञानमती कुशवाहा
कृष्ण कुमार यादव

प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य: वर्तमान परिदृश्य एवं भावी सम्भावनाएं

डॉ० राजीव अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज अतर्रा (बाँदा)

ज्ञानमती कुशवाहा
बी. ए., एम.एड.

कृष्ण कुमार यादव
बी.एससी., बी.एड.

प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य वर्तमान : परिदृश्य एवं भावी सम्भावनाएं

डॉ० राजीव अग्रवाल

ज्ञानमती कुशवाहा

कृष्ण कुमार यादव

E-book संस्करण: 2023

मूल्य: ₹ 99

ISBN: 978-93-340-0099-3

प्रकाशक -

कृष्ण कुमार यादव

कोतवाली रोड बबेरू

जिला, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड - 210121

मो. - 8543088065

ई-मेल: krishna2012banda@gmail.com

प्राक्कथन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (N.C.F.-2005) में बच्चों के विद्यालयी जीवन को विद्यालय के बाहर के जीवन से जोड़े जाने का सुझाव दिया गया है। यह सिद्धांत किताबी पढ़ाई की परंपरा से हटने की सलाह देता है, और करके सीखना ही शिक्षण की सर्वाधिक विधियों में से एक हैं।

करके सीखना है अनुभव से सीखना शिक्षण की सर्वाधिक प्रभावी विधियों में से एक है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही आवश्यक नहीं है। पुस्तकीय ज्ञान मस्तिष्क को विकसित करता है। मस्तिष्क एवं हृदय एक दूसरे के पूरक हैं। अत: मस्तिष्क एवं हृदय दोनों का संतुलित विकास शिक्षा से होना अनिवार्य है। हृदय अनुभूति का स्रोत है जिसके विकास के लिए हमें विद्यार्थियों की उनकी रूचि के अनुसार अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है जिससे उनके अंतस में छिपी प्रतिभा को अभिव्यक्ति मिल सके। अतः पाठ्यक्रम में मनोरंजनात्मक, कलात्मक, रुचिपूर्ण, क्राफ्ट कार्य क्रियाकलापों का समावेशन आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **"प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य : वर्तमान परिदृश्य एवं भावी संभावनाएं"** हैं जिसे 6 अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय- में प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य का अध्ययन परिचय दिया गया है। जिसके अंतर्गत शिक्षा विकास की प्रक्रिया, प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप, प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य का आशय एवं महत्व आदि के बारे में बताया गया है।

द्वितीय अध्याय - में संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण की विवेचना की गई है।

तृतीय अध्याय- में शोध अध्ययन की प्रक्रिया के बारे में तथा उसके अंतर्गत शोध अध्ययन विधि, अध्ययन समष्टि, न्यादर्श चयन विधि तथा प्रयोगों का प्रशासन के बारे में विवेचना की गई है।

चतुर्थ अध्याय- में चयनित क्राफ्ट कार्य के प्रयोगात्मक वस्तुओं के निर्माण के बारे में विवरण दिया गया है।

पंचम अध्याय- में प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में क्राफ्ट के कार्य के स्थान, विद्यालय में क्रियान्वयन, क्राफ्ट का चयन, ध्यान देने योग्य बातें, मूल्यांकन, पाठ्यक्रम में समावेश हेतु सुझाव इनका वर्णन किया गया है।

षष्ठ अध्याय - में निष्कर्ष एवं सुझाव की विवेचना की गई है। प्रस्तुत पुस्तक लघुशोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं जब तक की वह जन सामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक हर एक पाठक में सकारात्मकता का संचार करने एवं ऊर्जावान बनाने में सहायक सिद्ध होगी। इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते है। प्रस्तुत पुस्तक में त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

डॉ० राजीव अग्रवाल
ज्ञानमती कुशवाहा
कृष्ण कुमार यादव

विषय सूची

तालिका सूची

चित्र सूची

प्रथम अध्याय: अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा समाज में परिमार्जन का सशक्त माध्यम है। पुरानी मान्यताओं का परिमार्जन एवं नवीनीकरण तथा नवीन विचारों का प्रवेश शिक्षा के माध्यम से होता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के मस्तिष्क का विकास किस प्रकार होता है कि वह अन्य सभी जीव धारियों से अधिक श्रेष्ठ मनुष्य माना जाता है। शिक्षा की प्रक्रिया उसे सामाजिक कुशलता प्रदान करती है। उसके शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक, कौशलात्मक गुणो को उजागर कर उसके व्यक्तित्व का विकास करती है संस्कृति को सुरक्षित करती है भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित करती है। शिक्षा से व्यक्ति में सामजस्य एवं तदात्मता का विकास होना आवश्यक है। शिक्षा के संबंध में विभिन्न शिक्षाविदों के विचार इस प्रकार है।

गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर:- सर्वोच्च शिक्षा वह शिक्षा है जो हमें केवल सूचनाए नहीं देती वरन हमारे जीवन एवं संपूर्ण सृष्टि में तादात्मस्थापित करती है।

पेस्तालोज्जी:- मानव की आंतरिक शक्तियों का स्वाभाविक,सामंजस्यपूर्ण एवं प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है।

''The meaning of education is to emancipate the individual and we need the education of the whole man – physical, mental, intellectual and spiritual.''

Dr. Radhakrishnan

शिक्षा के अति महत्वपूर्ण पहलुओं में से व्यवसायिक कुशलता एवं कौशलात्मक निपुणता एक है। अन्य विभिन्न परिणामों के साथ-साथ सर्वप्रथम गांधी जी ने व्यवसायिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा की संकल्पना की उन्होंने बेसिक शिक्षा का एक नया विचार प्रदान किया जो आत्मबल प्रदान करने वाला एक सबल माध्यम था। शिक्षा के संबंध में उनके विचार मौलिक थे। उन्होंने अपने शिक्षा संबंधी विचार **'हरिजन'** पत्रिका में प्रकाशित करना प्रारम्भ किया आगे चलकर यही विचार बेसिक शिक्षा योजना का आधार बने।

18 फरवरी सन 1939 में 'हरिजन' पत्रिका में उन्होंने कहा- हमारी शिक्षा को क्रांतिकारी हो जाना चाहिए। मस्तिष्क को हाथ के द्वारा शिक्षित करना आवश्यक है यदि मैं कवि होता तो पांच अंगुलियों की संभावनाओं पर कविता लिखता। आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि दिमाग ही सब कुछ है हाथ एवं पैर कुछ नहीं। वह व्यक्ति जो अपने हाथों को प्रशिक्षित नहीं करते हैं वह शिक्षा के अति साधारण मार्ग पर चलते हैं, जिस प्रकार बिना

संगीत के जीवन। पुस्तकीय ज्ञान ही बच्चों सम्पूर्ण ध्यान आकर्षित करने में पर्याप्त नहीं है। शब्दों की शिक्षा थकान को बढ़ाती है तथा बच्चों के मस्तिष्क की क्रियाशीलता को कम करती है । यदि शिक्षा सही एवं गलत के बीच अंतर करना नहीं सिखाती एक को ग्रहण करना दूसरे को त्यागना नहीं सिखाती, तो वह मिथ्या है।

शिक्षा [Education] का शाब्दिक अर्थ विद्यार्थियों की आंतरिक क्षमताओं को उजागर करना है परंतु पुस्तकीय ज्ञान अधिकांशतःवाह्य ज्ञान है, जिसकी प्रवृत्ति बाह्य से आंतरिक होती है। यह विद्यार्थियों की अभिक्षमताओं को पूर्णता अभिव्यक्ति नहीं देती।अतः आवश्यकता है शैक्षिक पाठ्यक्रम में नवीन क्रियाकलापों की समावेश की, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके। समय-समय पर विभिन्न समितियों एवं आयोगों ने शिक्षा के स्वरूप में सुधार कर उसे सुदृढ़ बनाने की कोशिश की है। **'बेसिक शिक्षा' (1937 ई.), 'कोठारी कमीशन' (1966 ई.) 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' (1986 ई.)** ने कार्य प्रधान शिक्षा का समर्थन किया। ये कार्य केवल हाथ से किया गया कार्य नहीं बल्कि विद्यार्थियों के आंतरिक गुणों का उजागर करने वाला होने चाहिए।ये कार्य कलात्मकता, रचनात्मक, नृत्य, संगीत, खेल ऐसी विभिन्न क्रियाओं में हो सकते हैं।

अतः शिक्षा केवल ज्ञान प्रधान ही नहीं होनी चाहिए बल्कि उसमें व्यवहारिक उपयोगिता भी होनी चाहिए। विद्यार्थी जीवन में ही उनमें कार्य के प्रति सम्मान की भावना का विकास होना आवश्यक है तथा इस विकास की नींव रखने की जिम्मेदारी परिवार, विद्यालय एवं समुदाय सभी की है। तभी प्रत्येक विद्यार्थी भारत का आदर्श नागरिक होगा।

1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है| इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा' का महत्वपूर्ण स्थान है| जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारंभ कर देता है| वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है| धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरूप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है| बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता है जिसके परिणाम स्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित,अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है|

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है अपितु उनका चारित्रिक विकास भी करती है| संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है| शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन

करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है| सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय समाज और समुदाय बालक की सहायता करते हैं| बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर के अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके| बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है| उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक व्यवसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है|

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है| ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे| क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा शासक प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार व्यापारी देते थे| शूद्र छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की आपूर्ति करते थे| इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया| सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति की क्षमता वह आंतरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गयी| वर्णों के आधार पर तदाअनुरूप चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक है ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शूद्र-धर्म| कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ| जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है| इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा सके, और इस प्रायोगिक युग में सकारात्मक सोच का विकास कर सके| वर्तमान समय में उच्च शिक्षा की जो स्थिति है उसमे कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च शिक्षा के सन्दर्भ में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है|

1.1.2 प्राथमिक शिक्षा: ज्ञान की आधारशिला

शिक्षण का कार्य समस्त कार्यों में पवित्रतम और परमावश्यक माना जाता है। शिक्षा किसी राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला होती है। यह राष्ट्र की प्रगति का मापदंड तथा भविष्य का प्रकाश स्तंभ होती है। प्रत्येक राष्ट्र चाहता है कि उसके नागरिकों का शारीरिक,मानसिक, बौद्धिक, नैतिक तथा आर्थिक विकास हो और वे उन्नति करते हुए आगे बढ़े। किसी भी राष्ट्र के दो सशक्त आधार होते हैं—प्रथम प्राकृतिक संसाधन और द्वितीय मानवीय संसाधन। प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से चाहे कितना भी संपन्न क्यों ना हो, परंतु यदि उस राष्ट्र के मानवीय संसाधन विकसित नहीं हैं तो उसके प्राकृतिक संसाधनों की संपन्नता का कोई अर्थ नहीं रह जाता है। शिक्षा मानवीय संसाधन के निर्माण एवं विकास की सतत् एवं सशक्त प्रक्रिया है। यूंतो सभ्यताओं के प्रादुर्भाव के समय से ही शिक्षा मानव विकास का महत्वपूर्ण साधन रही है परंतु वर्तमान तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के युग में इसकी गरिमा द्विगुणित हो गयी है। आज शिक्षा न केवल मोक्ष प्राप्ति का साधन मानी जाती है, अपितु समाज के विकास

के लिए एक सतत् क्रिया एवं आधार है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति की मनोवृत्ति, मूल्यों, ज्ञान तथा कौशल में अभिवृद्धि की जा सकती है। देश के नागरिकों का विकास शिक्षा पर ही आधारित होता है। अतः प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के लिए शिक्षा की श्रेष्ठतम् व्यवस्था करता है। शिक्षा की व्यवस्था की सफलता तथा असफलता उससे संबंधित आयोजकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों इत्यादि पर आश्रित रहती है। शिक्षा नीति चाहे कितनी भी अच्छी क्यूंन हो लेकिन यदि इस प्रक्रिया से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने दायित्वों का बोध नहीं होगा तथा नीतियों के प्रति प्रतिबद्धता नहीं होगी तो नीति की सफलता सन्देहास्पद रहेगी।

भारतवर्ष सदैव से ही धर्म एवं संस्कृति का अग्रदूत रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के शैक्षिक परिदृश्य में बहुत तीव्र गति से परिवर्तन हुए हैं। आज शिक्षा का स्वरूप काफी कुछ बदल गया है। अब शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि शिक्षा राष्ट्रीय विकास का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है, जिसका सर्वप्रमुख कार्य मानवीय संसाधनों को विकसित करना है। इस प्रक्रिया में प्राथमिक शिक्षा मानवीय संसाधनों को उचित ढंग से विकसित करने के लिए आधार स्तंभ का कार्य करती है। यही कारण है कि हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान के अनुच्छेद- 45 में इच्छा व्यक्त की थी कि संविधान के लागू होने के 10 वर्ष के अंदर 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा देने का प्रयास किया जाए, जो कि संविधान के लागू होने के 60 वर्षों के पश्चात् सन् 2010 में साकार किया जा सका है। प्राथमिक शिक्षा के इस धीमी प्रगति के अनेक कारण हो सकते हैं, जिन्हें प्रशासनिक, सामाजिक तथा नैतिक कारकों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन सभी कार्यों से संबंधित सर्वमान्य बात प्राथमिक शिक्षा में जवाबदेही की है। वर्तमान में अनेक नीतियों, योजनाओं के होते हुए भी प्राथमिक शिक्षा के स्तर में गिरावट देखी जा सकती है। जिसका कारण शिक्षा से संबंधित विभिन्न व्यक्तियों जैसे कि- प्रशासकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों में कर्तव्य बोध का अभाव दिखाई पड़ता है अर्थात् वे अपने निर्दिष्ट कार्यों को उतनी मेहनत एवं लगन के साथ करते हुए नहीं पाए जा रहे हैं जितनी कि उनसे अपेक्षा की जाती है। जहां एक ओर प्रशासक, प्रशासनिक कार्यों के प्रति उदासीन हैं वही दूसरी ओर अभिभावक अपने पाल्यों की शिक्षा में रुचि नहीं ले रहा है। ऐसी परिस्थिति में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक उत्तरदायित्व की भावना आवश्यक प्रतीत होती है तथा शिक्षकों से आशा की जाती है कि शिक्षण संस्थाओं में अपने कर्तव्यों का निर्वहन उचित ढंग से करें तथा कल्पनाशील एवं नवाचारी शिक्षण विधियों, रचना कौशलों, युक्तियों, प्रविधियों इत्यादि के माध्यम से सृजनशील नागरिकों का निर्माण करें, जिससे कि प्राथमिक शिक्षा अपने वांछनीय लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

1.1.3 भारत में प्राथमिक शिक्षा का विकास

भारतीय परम्परा में शिक्षा को सदैव से सबसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। एक सम्प्रत्यात्मक रूप में भारत में शिक्षा को विद्या की संज्ञा मिली है। उपनिषदीय भाषा में इसकी परिभाषा करते हुए कहा गया- "सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् विद्या वह है जो हमें मुक्ति प्रदान करे। यह मुक्ति है अविद्या से। अब प्रश्न उठता है कि अविद्या

क्या है? अविद्या झूठे ज्ञान को कहते हैं। अविद्या असत्य का घोतक है और विद्या सत्य का घोषणा। जितने भी विषय हैं, जितने भी प्रयास हैं उनका कार्य केवल सत्य को जानना ही है। असत्य को जानकर ही हम सत्य की पहचान कर सकते हैं। इसीलिए भारतीय परम्परा में शिक्षा का संबंध श्रेय एवं प्रेय दोनों के साधन के रूप में हैं। पर शिक्षा का इतना उद्दान्त आदर्श एवं सम्प्रत्यात्मक समृद्धि होते हुए भी इसकी सुलभता सीमित थी। समाज के एक बहुत बड़े भाग को इससे वंचित कर दिया गया था। पर कालांतर में जनतांत्रिक प्रवृत्तियों के विस्तार और ज्ञान के विस्फोट ने शिक्षा का अप्रत्याशित विस्तार किया और आज यह सभी की आवश्यकता के रूप में प्रविष्ठित हो चुकी है। आज यह स्वीकार कर लिया गया है कि समाज के सभी लोगों को शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए। अंग्रेजी शासन के फलस्वरूप पाश्चात्य शिक्षा का प्रचार-प्रसार, पुनर्जागरण आंदोलन और समाज सुधार आंदोलनों के फलस्वरूप भारतीय समाज में जो जन-चेतना उभर कर सामने आई, उससे आधुनिक शिक्षा की महत्वता प्रतिष्ठित हुई और शिक्षा विशिष्ट वर्गों की परिधि में से निकल कर पूरे समाज को अपने आगोश में लेने के लिए अग्रसर हो उठी।

पर हम यह भी देखते हैं कि आजादी के छ: दशक से भी अधिक व्यतीत हो जाने के बाद भी शिक्षा के क्षेत्र में वांछित सफलता नहीं मिल सकी है। अभी हम प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य से काफी दूर हैं। संख्यात्मक रूप से तो हम पिछड़े ही हैं पर गुणात्मक रूप से तो हम असफल हो चुके हैं। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र की कमियों की पहचान करें और उसको दूर करने के उपायों पर भी चिंतन करें व आवश्यक कार्यक्रमों को भी लागू करें। यह प्रश्न इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि आज शिक्षा को एक मूल अधिकार के रूप में प्रतिष्ठा मिल चुकी है। आज हमारे सामने चुनौती है, वह यह है कि प्राथमिक शिक्षा की सफलता, निजीकरण को बढ़ावा देने में अथवा सरकारीकरण में अथवा दोनों को बढ़ावा देने में है अथवा दोनों के बढ़ावा देने के साथ वांछित सुधार की आवश्यकता है?

इस पर व्यवस्थित रूप से विचार करने के लिए यह आवश्यक है कि हम भारतीय शैक्षिक विकास पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ एक विहंगम दृष्टि डालें और इस ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में आज हमारी शिक्षा व्यवस्था किस पड़ाव पर पहुंची है? उसकी प्रकृति, उसकी समस्या और उसके समक्ष कौन-सी चुनौतियाँ हैं? विशेषकर प्राथमिक शिक्षा को लेकर क्योंकि सारी शिक्षा व्यवस्था की नींव यही प्राथमिक शिक्षा ही है।

1.1.3.1. प्राचीन काल में प्राथमिक शिक्षा

भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा,मुक्ति एवं आत्मा आत्मबोध के साधन के रूप में थी। यह व्यक्ति के लिए नहीं बल्कि धर्म के लिए थी। भारत की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक परंपरा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है डॉक्टर अल्टेकर के अनुसार,"वैदिक युग से लेकर अब तक भारत वासियों के लिए शिक्षा का अभिप्राय यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का स्रोत है तथा जीवन के विभिन्न कार्यों में यह हमारा मार्ग आलोकित

करती है" प्राचीन काल में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया गया था भारत 'विश्वगुरू' कहलाता था। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा को प्रकाशस्रोत्र, अंतर्दृष्टि, ज्ञानचक्षु और तीसरा नेत्र आदि उपनामों से विभूषित किया है। उस युग की यह मान्यता मान्यता थी कि जिस प्रकार अंधकार को दूर करने का साधन प्रकाश है उसी प्रकार व्यक्ति के सब संशयो और भ्रमों को दूर करने का साधन शिक्षा है प्राचीन काल में इस बात पर बल दिया गया है कि शिक्षा व्यक्ति को जीवन का यथार्थ दर्शन कराती है तथा इस योग्य बनाती है कि वह भवसागर की बाधाओं को पार करके अंत में मोक्ष को प्राप्त कर सके जो कि मानव जीवन का चरम लक्ष्य है

प्राचीन काल की शिक्षा का प्रारंभिक रूप हम ऋग्वेद में देखते हैं योग की शिक्षा का उद्देश्य था। तत्वसाक्षात्कार। ब्रह्मचर्य, तप और योगाभ्यास से तत्व का साक्षात्कार करने वाले ऋषि, विप्र, वैधस कवि मुनि, मनीषी के नामों से प्रसिद्ध थे। वैदिक संहिताओ में,जिनका स्वाध्याय,संगो पांग अध्ययन, श्रवण, मनन और वैदिक शिक्षा रही।

विद्यालय 'गुरुकुल', 'आचार्यकुल', 'गुरु ग्रह' इत्यादि नामों से विदित थे। आचार्य के कुल में निवास करता हुआ, गुरु सेवा और ब्रह्मचर्य व्रतधारी वेद का अध्ययन करता था शिक्षक को आचार्य और गुरु कहा जाता था और विद्यार्थी को ब्रह्मचारी, व्रतधारी, आचार्य कुल वासी मंत्रों के दृष्टा अर्थात साक्षात्कार करने वाले ऋषि अपने अनुभूति और उसकी व्याख्या और प्रयोग को ब्रह्मचारी, अंतर्वासी को देते थे। गुरु के उपदेश पर चलते हुए वेद ग्रहण करने वाले ऋषि होते थे। वेद मंत्र कंठस्थ किए जाते थे। आचार्य स्वर से मंत्रों का परायण करते और ब्रह्मचारी उनको उसी प्रकार तोहरा के चले जाते थे।

1.1.3.2 मध्यकाल में प्राथमिक शिक्षा

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जाने वाले ही सरकार के योग समझे जाने लगे। हिंदू अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहो और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रूचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के संरक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदे बनती गई, साथ ही मकतबो, मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। मकतब प्रारंभिक शिक्षा के केंद्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबो की शिक्षा धार्मिक होती थी विद्यार्थी कुरान के कुछ अंशों का कंठस्थ करते थे। पढ़ना, लिखना, गणित और चिट्ठीपत्री में सीखते थे। इनमें हिंदू बालक भी पढ़ते थे।

भक्तों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहां प्रधानता धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। 77 इतिहास साहित्य व्याकरण तर्कशास्त्र गणित कानून इत्यादि की पढ़ाई होती थी सरकार शिक्षकों को नियुक्त करती थी कहीं-कहीं प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा भी उनकी नियुक्ति होती थी अध्यापन फारसी के माध्यम से होता था अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ विषय था छात्रावास का प्रबंध किसी किसी मदरसे में होता था दरिद्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलती थी अनाथालय का संचालन होता था शिक्षा निशुल्क थी हस्तलिखित पुस्तकें

पढ़ी और पढ़ाई जाती थी राजकुमारों के लिए महिलाओं के भीतर शिक्षा का प्रबंध था राज्य व्यवस्था सैनिक संगठन युद्ध संचालन साहित्य इतिहास व्याकरण कानून आदि का ज्ञान ग्रह शिक्षा से प्राप्त होता था राजकुमारी अभिशाप अतिथि शिक्षकों को बड़ा सम्मान था वे विद्वान और सच्चरित्र होते थे छात्र और शिक्षकों को आपसी संबंध प्रेम और सम्मान का था सादगी सदाचार विद्या प्रेम और धर्म आचरण और पर जोर दिया जाता था कंठस्थ करने की परंपरा थी प्रश्नोत्तर व्याख्या और उदाहरणों द्वारा पाठ पढ़ाए जाते थे कोई परीक्षा नहीं थी अध्ययन अध्यापन में प्राप्त अवसरों में शिक्षक छात्रों की योग्यता और विद्वत्ता के विषय में तत्व प्राप्त करते थे दंड प्रयोग किया जाता था जीविका उपार्जन के लिए भी शिक्षा दी जाती थी दिल्ली आगरा भीतर जौनपुर मालवा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र थे मुसलमान शासकों को संरक्षण के अभाव में भी संस्कृत का नाटक व्याकरण दर्शन ग्रंथों की रचना और उनका पठन-पाठन बराबर होता रहा।

1.1.3.3 आधुनिक काल में प्राथमिक शिक्षा

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्मप्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों से डाली गई। उन्होंने कई विद्यालय स्थापित किए। प्रारंभ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा धीरे-धीरे कार्यक्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढ़ाए जाते थे। रविवार को विद्यालय बंद रहता था। अनेक शिक्षक छात्रों की पढ़ाई अनेक श्रेणियों कराते थे। अध्यापन का समय नियत था।साल भर में छोटी-बड़ी अनेक छुट्टियां हुआ करती थी

प्रायः 150 वर्षों के बीतते बीतते व्यापारी ईस्ट इंडिया कंपनी राज्य करने लगी।विस्तार में बाधा पड़ने के डर से कंपनी शिक्षा के विषय में उदासीन रही। फिर भी विशेष कारण और उद्देश्य से 1780 में कलकत्ते में "कोलकाता मदरसा" और 1791 में बनारस में "संस्कृत कॉलेज" कंपनी द्वारा स्थापित किए गए। धर्म प्रचार के विषय में भी कंपनी की पूर्व नीति बदलने लगी। कंपनी अब अपने राज्य के भारतीयों को शिक्षा देने की आवश्यकता को समझने लगी 1813 के आज्ञा के अनुसार शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चय किया गया किस प्रकार की शिक्षा दी जाए इस पर प्राच्य और पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों में मतभेद रहा। वाद विवाद चलता रहा। अंत में "लार्ड मैकाले" के तर्क वितर्क और "राजा राममोहन राय" के समर्थन से प्रभावित हो 1835 ई. लॉर्ड बेंटिक ने निश्चय किया कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य और यूरोपीय इतिहास विज्ञान इत्यादि की पढ़ाई हो और इसी में 1813 का आज्ञापत्र में अनुमोदित धन का व्यय हो। प्राच्य शिक्षा चलती चले परंतु अंग्रेजी और पश्चिमी विषयों के अध्ययन और अध्यापन पर जोर दिया जाए।

1.1.4 प्राथमिक विद्यालय का स्वरूप

वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक स्कूलों में दाखिला लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाने की बजाए इस बात पर अधिक बल दिया जा रहा है कि विद्यार्थी अपनी शिक्षा जारी रखें और कुछ सीखें। सबको प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के कार्यक्रम के तीसरे पहलू के रूप में न्यूनतम अधिगम स्तर पर कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जिसके तहत इस बात का ध्यान रखाजा रहा है कि कार्यक्रम के शैक्षिक स्तर में सुधार कर एक पैकेज निर्धारित किया गया है, जिसके अन्तर्गत देश में विभिन्न शैक्षिक स्तर के सभी बच्चों के लिए शिक्षा का एक निश्चित लक्ष्य तय कर दिया गया है।

देश की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में कमी की एक प्रमुख वजह यह भी है कि इस की जिम्मेदारी पूर्णतः राज्य सरकारों पर ही छोड़ दी गयी है। यही कारण है कि आज देश के तमाम राज्यों में वही पुराने 1986 के ढर्रे पर शिक्षा व्यवस्था को संचालित किया जा रहा है।

आजादी के 68 साल बीत जाने के बाद भी सरकारी नियंत्रण वाले प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में न तो शिक्षा का स्तर सुधर पा रहा है और नही इनमें विद्यार्थियों को बुनियादी सुविधाएं मिल पा रही हैं। जाहिर है कि प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा के सुधार के लिए जब तक कोई बड़ा कदम नहीं उठाया जाता, तब तक हालात नहीं बदलेंगे। निम्न मध्य वर्ग और आर्थिक रूप से सामान्य स्थिति वाले लोगों के बच्चों के लिए सरकारी स्कूल ही बचते हैं। देश की एक बड़ी आबादी सरकारी स्कूलों के ही आसरे है। फिर वे चाहे कैसे हों। इन स्कूलों में न तो योग्य अध्यापक हैं और नही मूल भूत सुविधाएं। इन स्कूलों में पढ़ाई-लिखाई की असलियत स्वयं सेवी संगठन प्रथम की हर साल आने वाली रिपोर्ट बताती है।

1.1.4.1 परिषदीय विद्यालय

सरकारी स्कूलों को देश की सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है यह राष्ट्रीय स्तर या राज्य स्तर पर हो सकता है सरकारी स्कूलों में कम शुल्क संरचना होती है क्योंकि उन्हें राज्य और संघीय सरकारों द्वारा अनुदान और वित्त पोषित किया जाता है।

1.1.4.2 निजी विद्यालय

शिक्षा को निजी लोगों और संस्थाओं के हवाले करना और उनको अनेक तरीकों से काम करने की आजादी देने को शिक्षा का निजीकरण अथवा प्राइवेट शिक्षा कहते हैं पिछले कुछ दशकों में शिक्षा के तरीकों में बदलाव आया है। पहले शिक्षा संस्थान सरकार द्वारा चलाए जाते थे परंतु कुछ समय से यह निजी संगठनों की साझेदारी से भी चलाए जाने लगे हैं। प्राइवेट विद्यालय में प्रधानाचार्य ही उच्च विद्यालय पर नियम कानून आदि

जो भी जिम्मेदारियां होती है वह वहां के प्रधानाचार्य लागू करते हैं वही पूरी समय सरणी बनाते हैं वही सबको नियंत्रित करते हैं निजी अथवा प्राइवेट विद्यालयों में सरकारी विद्यालय के मुताबिक ज्यादा सुविधाऐ होती हैं।निजी विद्यालयो में अधिकतर नये यंत्रों के द्वारा पढ़ाया जाता है।जैसे कम्प्यूटर आदि। बच्चों को यहाँ सभी चीजें व्याहारिक रूप से सिखाई जाती है।इन विद्यालयों में शौचालय, पुस्तकालय जैसी मूल वसुविधाएं उपलब्ध होती है। ऐसे संस्थानों में दाखिला पाने के लिए बच्चों को एक परीक्षा से गुजरना पड़ता है ऐसा करने से बच्चों को प्रवेश दिया जाता है इन विद्यालयों में सीमित संख्या में ही बच्चों को दाखिला दिया जाता है स्कूलों में हर विषय के लिए अलग-अलग शिक्षक होते है। ऐसे विद्यालयों में शिक्षक अपने विषय में निपुण होते हैं और वास्तविक रूप से छात्रों को ज्ञान देते हैं।

1.1.4.3 मिशनरी विद्यालय

मिशनरी विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी लेकिन अब इन में काफी सुधार आया है इन विद्यालयों में पहली वाली ता अंग्रेजी भाषा को दी जाती है।

1.1.4.4 मदरसा विद्यालय

मदरसा किसी भी प्रकार के शैक्षिक संस्थान के लिए अरबी शब्द है, चाहे धर्मनिरपेक्ष या धार्मिक (किसी भी धर्म का)' और स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय शब्द अलग तरह से प्रयोग होता है। शब्द मदरसा अलग अलग तरीके से लिप्यंतरित है मदरसा, मेडरेसा, मदरजा, मेडरेस आदि। पश्चिम में, शब्द आमतौर पर एक विशेष प्रकार के धार्मिक स्कूल को संदर्भित करता है, हालांकि इस अध्ययन का एकमात्र विषय नहीं हो सकता है। भारत जैसे देशों में, मदरसा के सभी छात्र मुसलमान नहीं है, एक आधुनिक पाठ्यक्रम भी है।

1.1.5 प्राथमिक शिक्षा की समस्याएं

- भौतिक संसाधनों में कमी
- बालिकाओं एवं नामांकन एवं उपस्थिति की समस्या
- अपव्यय एवं अवरोध की समस्या प्रोत्साहन योजनाओं का समय से क्रियान्वित ना होना
- सामुदायिक जागरूकता में कमी शिक्षकों की कमी
- कार्य का बोझ
- बालकों का समुचित सर्वेक्षण ना हो पाना
- आर्थिक एवं सामाजिक पिछड़ापन शिक्षकों में व्यवहार कुशलता एवं उत्तरदायित्व बौद्ध की कमी
- विद्यालय का सौंदर्यीकरण एवं आंतरिक व्यवस्था

- ❖ अध्यापक का विद्यालय में ठहराव
- ❖ परीक्षा और मूल्यांकन में औपचारिकता
- ❖ छात्रों में विद्यालय एवं शिक्षा के प्रति रुचि में कमी थी

1.1.6 क्राफ्ट कार्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पिछले 70 वर्षों में, मुख्यतः पिछले 30 वर्षों में कार्य शिक्षा को स्कूली शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर एक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक भाग के रूप में प्रस्तुत किए जाने पर बल दिया गया है।ये सभी प्रकार के हस्तकार्यों के प्रति सम्मान और गरिमा के दृष्टिकोण का निर्माण करती है। यह हस्तकार्यों तथा प्रतिष्ठा पूर्ण कार्यों में संलग्न व्यक्तियों के भेद को दूर करती हैं। अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने में विद्यार्थियों को सक्षम बनाती है। यह समाज के लिए उपयुक्त कार्य कौशलों का विकास करती है।

कार्य शिक्षा, काम के प्रति उचित व्यवहार, काम के अनुकूल आदतों तथा मूल्यों का विकास करती है। यह व्यक्ति को काम से संबंधित आवश्यक ज्ञान प्रदान कर उत्पाद कार्य द्वारा आर्थिक विकास में मदद करती हैं। इस प्रकार यह विद्यार्थियों को सामाजिक कार्यों से जोड़कर सामाजिक गुणों का विकास करती है।

कार्य शिक्षा विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास में सहायक है। इसलिए यह समस्त योजनाओं रिपोर्टों तथा दस्तावेजों का आवश्यक अंग रही है। गांधीजी की बुनियादी शिक्षा, कोठारी कमीशन रिपोर्ट, एन.सी.ई.आर.टी. की 10 वर्षीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा, ईश्वरभाई पटेल समिति की रिपोर्ट, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 तथा 2005 में इसे शिक्षा का आवश्यक अंग माना है। आइए दस्तावेजों के प्रमुख बिंदुओं को समझें-

1.1.6.1 गांधीजी की बुनियादी शिक्षा

गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम में बच्चे, समाज तथा देश की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए क्रियाशील पाठ्यक्रम का निर्माण किया। उनके द्वारा प्रस्तावित नई तालीम या बुनियादी शिक्षा के लिए उन्होंने शिल्प या हस्त उद्योग (कताई, बुनाई, बागवानी, कृषि, काष्टकला, चर्मकार मिट्टी का काम आदि में से कोई एक) स्थान दिया। उन्होंने कार्य के माध्यम से शिक्षा पर जोर दिया।

गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा पाठ्यक्रम के अंतर्गत आधारभूत शिल्प जैसे कृषि, कताई, बुनाई, लकड़ी, चमड़े, मिट्टी का काम, मछली पालन, फल व सब्जी की बागवानी, बालिकाओं हेतु गृह विज्ञान तथा स्थानीय एवं भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षाप्रद हस्तशिल्प को रखा था। इसके अलावा मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं समान विज्ञान कला, हिंदी, शारीरिक शिक्षा आदि को रखा। शिक्षण विधि को शिक्षण के वास्तविक कार्यकलापों और अनुभव पर अनिवार्य रूप से आधारित किया।

1.1.6.2 कोठारी आयोग (1964-66)

कोठारी आयोग भारत का पहला ऐसा शिक्षा आयोग था जिसने अपनी रिपोर्ट में सामाजिक बदलावों को ध्यान में रखते हुए कुछ ठोस सुझाव दिए आयोग ने सुझाव दिया कि शिक्षा के अनिवार्य अंग के रूप में समाज सेवा और कार्यानुभव जिसमें हाथ से काम करने तथा उत्पादन अनुभव सम्मिलित किया जाए।

1.1.6.3 ईश्वरभाई पटेल समिति (1977)

इस समिति ने कार्यानुभव को समाजोपयोगी उत्पादक कार्य का नाम देते हुए उसके सामाजिक सांस्कृतिक व मनोरंजनात्मक पक्ष पर विशेष बल दिया। इस समिति ने छ: आधारभूत आवश्यक क्षेत्रों की पहचान की यथा भोजन, आवास, वस्त्र, स्वास्थ्य तथा स्वच्छता, संस्कृति और मनोरंजन तथा सामुदायिक कार्य एवं समाज सेवा कार्यानुभव के क्रियाकलाप इन्हीं क्षेत्रों के इर्द-गिर्द विकसित किए जाने का सुझाव दिया।

1.1.6.4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

इसमें कार्यानुभव को को उदेश्यपूर्ण, सार्थक, संगठित हस्तकार्य के द्वारा सीखने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग के रूप में माना गया है। इसे पाठ्यक्रम के प्रत्येक स्तर पर उपयोगी सामुदायिक सेवा के रूप में शामिल करने की अनुशंसा की है। कार्यानुभव हेतु आयोजित की जाने वाली गतिविधियां विद्यार्थियों की रुचि क्षमता एवं आवश्यक आधारित आवश्यकता आधारित होता की दक्षता और ज्ञान का विकास हो सके यह गतिविधियां स्तर के अनुसार बढ़ते क्रम में आयोजित की जाएं।

शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बच्चों के ज्ञान, कौशलों, गुणों तथा कृतियों का विकास कर आत्म सहायता तथा उत्पादन नागरिक तैयार करना है।

1.1.6.5 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2000)

शोधकर्ता के लिए शोध समस्या से संबंधित उपयुक्त निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। संबंधित साहित्य सर्वेक्षण के द्वारा शोधकर्ता को अपने शोधकर्ता की स्पष्ट पृष्ठभूमि प्राप्त होती है निहित विभिन्न सिद्धांतों एवं धारणाओं को समझने में सहायता है। प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ता उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के संदर्भ मे शिक्षा एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों का अध्ययन कर रहा है। अतः उसे यह जानना नितन्त आवश्यक है कि इस क्षेत्र मे

कितना कार्य हो चुका है तथा उस कार्य की प्रकृति क्या है, जो कि संबन्धित साहित्य सर्वेक्षण के अध्ययन द्वारा ही संभव है।

कार्य शिक्षा -

कार्य शिक्षा को उद्देश्य पूर्ण और सार्थक शारीरिक मानवीय श्रम माना गया है, जो शिक्षण प्रक्रिया के अंतरंग भाग के रूप में आयोजित किया जाता है। इसका परिणाम सामग्री के उत्पादन और समुदाय की सेवा के रूप में प्रकट होता है जिसमें आत्मसंतोष तथा आनंद का अनुभव भी होता है। इसे शिक्षा के सभी स्तरों पर एक आवश्यक तत्व के रूप में सुनियोजित और श्रेणीबद्ध कार्यक्रमों के माध्यम से सिखाना चाहिए। इस क्षेत्र में जिन दक्षताओं का विकास किया जाएगा उनमें ज्ञान, समझ, व्यावहारिक कौशल और मूल आवश्यकता आधारित जीवन क्रियायेँ शामिल होंगी। जिन मुख्य कार्य श्रेणियों पर विशेष रूप से जोर देना होगा वे निम्नलिखित हैं-

- ऐसेकार्य जो व्यक्ति के स्वास्थ्य विज्ञान (हाइजीन), वेशभूषा, स्वच्छता आदि से जुड़े हों।
- परिवार में विकसित होने वाले सदस्य के रूप में घरेलू कार्य।
- कक्षा और विद्यालय में किए जाने वाले कार्य और विद्यालय के बाहर से क्रियाकलाप जो विद्यालयीन जीवन और अन्य शिक्षण विषयों के साथ समेकित हों, जैसे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान एवं अन्य।ये कार्य विशेष रूप से कार्य शिक्षा के उद्देश्यों को हासिल करने की की दृष्टि से तय किए गए हों।
- समुदाय में कार्य जो नि:स्वार्थ सेवा पर केंद्रित हैं।
- ऐसे कार्य जो व्यावसायिक विकास, उत्पादन, सामाजिक उपयोगिता और कार्य जगत की खोज से जुड़े हों।

कार्य शिक्षा की गतिविधियों का संयोजन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उनसे कार्य शिक्षा के उद्देश्यों को साकार किया जा सके जैसे शारीरिक श्रम के प्रति छात्रों में सम्मान की भावना पैदा करना, आत्मनिर्भरता के लिए मूल्य, सहकारिता की भावना, अध्यवसाय, सहायता करने की भावना, सहिष्णुताऔर कार्य आचरण।ये तमाम उद्देश्य उन उद्देश्यों के अलावा है जो उत्पादक कार्य और समुदायिक सरोकारों से जुड़े दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करते हैं। सिद्धांत और व्यवहार भी इस प्रकार के हों कि वे छात्रों को तथ्यों, अवधारणाओं और विभिन्न रूपों में कार्य स्थितियों के अंदर निहित वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझने योग्य बना सके। वह कच्चे माल के स्रोतों को जाने, औजारों और उपकरणों के उत्पादन और कार्य-प्रक्रिया के इस्तेमाल को समझें, प्रौद्योगिक रूप में आगे बढ़ने वाले समाज की जरूरत के मुताबिक कौशल अर्जित करें और उत्पादन की स्थितियों में अपनी भूमिका स्वयं सोचें और निश्चित करें। छात्रों में ऐसे कार्यक्रमों के जरिए कुछ कौशल विकसित करने होंगे जैसे पहचानना, चयन करना, व्यवस्थित करना और नवाचार आत्मक तरीके से विकसित करना। इनके अलावा अन्य कौशल जैसे

अवलोकन कुशलता के साथ अंगसंचालन और कार्य-अभ्यासों में सहभागिता भी उनकी उत्पादक कुशलता को बढ़ाने के लिए विकसित करनी होगी।

1.1.6.6 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

काम और शिक्षा-

काम के बारे में समान अर्थों में कहें तो यह एक ऐसी गतिविधि है जो कुछ बनाने या करने की तरफ इशारा करती हैं। इसका यह भी मतलब होता है कि धन या किसी अन्य वस्तु के बदले किसी और के लिए श्रम। इस प्रकार की कई गतिविधियां भोजन तथा दैनिक उपयोग की वस्तुओं के उत्पादन और लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की देखरेख में संबंधित है। अन्य गतिविधियों का संबंध समाज में प्रशासन और व्यवस्था से है। समाज में इन दो बुनियादी आयामों के अलावा (भोजन उत्पादन और सुचारू व्यवस्था की स्थापना) और भी कई ऐसी गतिविधियां हैं जिनका संबंध मनुष्य के हित से होता है और इसलिए उनको भी काम की श्रेणी में डाला जा सकता है।

इस अर्थ में काम से तात्पर्य हुआ समाज या समुदाय के अन्य लोगों के प्रति दायित्व का निर्वाह इसका यह भी अर्थ है कि समाज में व्यक्ति अपना और अपनी सामर्थ्य का योगदान दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति अथवा अर्थोपार्जन हेतु कर रहा है। दूसरे इसका आशय होता है कि किया गया काम सार्वजनिक निष्पादन मानकों के अनुरूप हो। क्योंकि किसी के योगदान का मूल्य दूसरे लोग लगाते हैं। तीसरे काम का मतलब सामाजिक जीवन में योगदान भी हो सकता है। चाहे वह समाज के लिए कुछ उत्पादन करना हो या सामान्य जीवन को संभव बनाने की कोई गतिविधि अंतिम बात यह है कि काम मानव जीवन को समृद्ध बनाता है क्योंकि यह सम्मान तथा आनंद के लिए नए आयाम सामने रखता है।

पूर्व प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक स्तर की स्कूली पाठ्यचर्या का पुनर्गठन करना चाहिए ताकि काम को ज्ञान अर्जन का शिक्षा शास्त्री माध्यम बनाकर मूल्यों व विविध कौशलों का विकास किया जा सके और काम की समस्त शिक्षा शास्त्री संभावनाएं हासिल की जा सके।पाठ्यचर्या को यह पहचानना चाहिए कि जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है उसे काम के संसार में प्रवेश करने की तैयारी की जरूरत है और काम-केन्द्रित शिक्षा शास्त्र में बढ़ती हुई जटिलताओं के साथ अनुसरण किया जा सकता है लेकिन उनको जरूरी लचीलेपन और प्रसंगिकता से समृद्ध भी रखना होगा। काम आधारित सामान्य क्षमताएं दक्षताएं शिक्षा के हर स्तर पर दी जानी चाहिए। आलोचनात्मक सोच अधिगम का हस्तांतरण, रचनात्मकता, संप्रेषण के कौशल, सौन्दर्यबोध काम के लिए प्रोत्साहन, सहयोगी क्रियान्वयन के मूल्य और सामाजिक जवाबदेही व उद्यमशीलता इसमें शामिल है। इसके लिए मूल्यांकन के मानक भी फिर से तय किए जाने होंगे. काम-केंद्रित शिक्षा के प्रभावी और सार्वभौमिक कार्यक्रम के बिना यह संभव नहीं दिखता की सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा (और बाद में सार्वभौमिक माध्यमिक शिक्षा कभी सफल हो सकेगी)

1.1.6.7 राज्य के पाठयचार्य की रूपरेखा (2007)

कार्य-अनुभव (कार्य और शिक्षा)

शिक्षा व्यवस्था के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हम शिक्षा व्यवस्था में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करें कि विद्यालय का ज्ञान परिवेश में जाकर हुनर कौशल के रूप ले ले। स्कूली ज्ञान और काम के बीच एक रिश्ता कायम हो। इसके लिए प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों को उकसाना होगा कि वे अपना लक्ष्य निर्धारित करें। बच्चों को भविष्य के लिए सपने बुनना और उन्हें साकार करने हेतु कुछ बनने हेतु प्रेरित करना होगा। महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन शिक्षा प्रणाली में कठिन परिश्रम और काम के साथ सीखने की संस्कृति का विकास करना पाठ्यचर्या प्रमुख सरोकार है। इससे ज्ञानार्जन और उत्पादन साथ-साथ जुड़ेंगे।

उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्र इतने परिपक्व हो जाते हैं कि कुछ कौशल युक्त कार्य गंभीरतापूर्वक कर सकते हैं। अतः मुख्य कार्य-श्रेणियां निम्नानुसार हो सकती हैं-

- सामुदायिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता।
- परिवारिक सदस्य के रूप में घरेलू कार्य।
- कक्षा और विद्यालय में किए जाने वाले विभिन्न क्रियाकलाप।
- समुदाय के कार्य जो नि:स्वार्थ सेवा पर केंद्रित हो।
- व्यवसायिक विकास, उत्पादन, सामाजिक उपयोगिता से जुड़े कार्य।

बच्चों की आयु व योग्यता को ध्यान में रखकर तैयार किया गया उपयोगी काम उनके लिए मूल्यों, बुनियादी, वैज्ञानिक, अवधारणाओं, कौशलों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के कारण के रूप में काम करता है। बच्चे काम के द्वारा अपनी एक अस्मिता पाते हैं और स्वयं को उपयोगी और महत्वपूर्ण समझते हैं। इसके माध्यम से वे समाज का हिस्सा बनते हैं और ज्ञान के निर्माण में सक्षम हो पाते हैं।

1.1.7 क्राफ्ट कार्य के आधार

क्राफ्ट कार्य का विकास प्राथमिक शिक्षा के मूल में विद्यमान गाधीवादी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में होना चाहिए। हमारा संविधान देश को एक प्रजातांत्रिक, सामाजिक, पंथनिरपेक्ष, काल्पनिक मूल्यों पर आधारित बनाने का प्रयास करता है। इसके लिए यह आवश्यहै कि बच्चों को क्राफ्ट कार्यों में संलग्न रखा जाए ताकि उन्हें उचित मार्गदर्शन का विकास हो सके।

क्राफ्ट कार्यों में भागीदारी तथा उपलब्ध संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने पर विद्यार्थी आत्मनिर्भर, मितव्यई, आर्थिक रूप से उत्पादक तथा स्वयं के लिए, परिवार के लिए एवं समुदाय के लिए उपयोगी हो जाता है।

क्राफ्ट कार्यों से निर्मित विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के विक्रय से विद्यार्थी धनराशि अर्जित कर सकते हैं क्राफ्ट कार्य से संबंधित क्रियाकलापों से यह आशा की जाती है कि यह क्रियाकलाप ग्रामीण समको के पुनरुद्धार में सहायक सिद्ध होंगे। क्राफ्ट कार्य से शरीर के स्वस्थ विकास के लिए शारीरिक विकास आवश्यक है। विद्यार्थियों को हस्त प्रधान वस्तुओं के निर्माण में शामिल करना कराना तथा स्वाभाविक एवं अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक सेवा के प्रति प्रेरित कराना है। विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में अधिक रूचि होती है। जब एक विद्यार्थी अकेला होता है, तब वह वार्तालाप, निर्माण, कलात्मक, वस्तुओं के एकत्रीकरण के खेल में अपनी रुचि प्रदर्शित करता है। उस समय वह वातावरण के साथ तदात्म स्थापित करने के लिए उत्सुक रहता है। जिसमें उसे स्वयं करके सीखना अत्यंत प्रिय है। विद्यार्थियों की सहज प्रकृति के उदात्तीकरण हेतु एक प्रबल एवं उपयोगी माध्यम प्रदान करते हैं।

1.1.8 प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्य

प्राथमिक शिक्षा में क्राफ्ट कार्यभारतीय शिक्षा आधुनिक विषयों में से एक है। यह महात्मा गांधी के विचारों के रूप में विकसित हुई, जिसमें कार्य केंद्रीय शिक्षा पर जोर दिया गया। इस प्रकार के कार्य समाज के लिए व्यवहारिक उपयोगिता रखते हैं।गाँधी जी की बेसिक शिक्षा योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण समाज का सामाजिक पुनरुद्धार करना था, इसमें गांधीजी ने प्राथमिक विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के हस्त प्रधान क्रियाकलापों के आयोजन की बात कही। इन क्रिया-कलापों के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक उपयोगिता एवं उत्पादकता से संबंधित अनुभव प्रदान किए जा सकें। इस विचारधारा का प्रमुख उद्देश्य है यह था कि प्रारंभिक अवस्था में ही विद्यार्थी अपने समाज की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आवश्यकताओं आशाओं एवं महत्वाकांक्षाओं को वास्तविक रूप से समझ सके।

क्राफ्ट कार्य भारतीय विद्यालयों का विषय है जहां विद्यार्थी विभिन्न व्यवसायिक शिक्षा संबंधी क्रियाकलापों यथा बुनाई,बागवानी पाक कला, चित्र कला तथा अन्य हस्तशिल्प क्रियाओं में से किसी एक क्रिया का चयन करते हैं। इन विभिन्न क्रियाकलापों में विद्यार्थी समूह के रूप में कुशलता एवं गहनता से कार्य करना सीखते हैं। यह विचारधारा सन 1978 ई० में शिक्षा मंत्रालय द्वारा गाँधीवादी मूल्यों तथा उनके विचारों को बढ़ावा देने हेतु प्रकाश में आई। विद्यार्थियों में व्यक्तिगत कौशल का विकास करते हुए क्राफ्ट कार्य का उदय समुदाय के रूप में कार्य करने की आदत का विकास करना, सामुदायिक विचारधारा को प्रोत्साहन देना, वैज्ञानिक प्रगति के प्रति जागरूकता को बढ़ावा तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

उद्देश्यों की प्राप्ति मे आने वाले कठिनाइयाँ भी समस्या का कारण बनती हैं। समस्या की अनुभूति उस समय होती है, जब मनुष्य किसी कार्य क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारु संचालन में कठिनाई महसूस करता है। कठिनाई के निवारण हेतु विकल्पों का चयन करता है। मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह बाधाओं में ही समाधान खोजने का प्रयास करता है। जहां विभिन्न शिक्षाविदों ने शिक्षा के बृहद अर्थ प्रस्तुत किए हैं, वहीं आज एक तरफ शिक्षा सूचना एवं तथ्यों की जानकारी बनकर रह गई है। वहीं दूसरी तरफ शिक्षा गुणवत्ता विहीन हो गई है। जिसके पास जितनी अधिक सूचना तथा जानकारी हैं उसे उतना ही अधिक शिक्षित माना जाता है। उसका मूल्यांकन भी उसी आधार पर किया जाता है। ऐसी शिक्षा पर मस्तिष्क का विकास तो कर देती है परंतु विद्यार्थियों के हृदय का विकास नहीं कर पाती। उन्हें स्वयं को अभिव्यक्त करने के अवसर प्राप्त नहीं होते है पुस्तकीय ज्ञान को अत्यधिक महत्वता उन्हें सीमित एवं कठोर बना देती हैं। इस पर भी उस ज्ञान की गुणवत्ता संदेहास्पद है। घर परिवार में भी विषय ज्ञान पर भी बल दिया जाता है। हम शिक्षा से शरीर, मन एवं आत्मा के विकास की बात करते हैं। परंतु वहां यह विचारणीय है कि संभावित विकास के लिए उचित पर्यावरण होना आवश्यक है। अनुकूल पर्यावरण के अभाव में सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता।

शिक्षा पर अंतरराष्ट्रीय आयोग ने शिक्षा एवं कार्य के बीच बढ़ रहे असमान विभाजन पर प्रकाश डाला तथा अपनी अनुशंसाओं को 'Learning To Be' नामक प्रपत्र में प्रकाशित किया।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पुस्तकों का अत्यधिक भार है, तथा इस भार को कलात्मक के साथ साझा करने की आवश्यकता है। इसे उतना ही महत्व दिया जाना आवश्यक है जितना अन्य विषयों को प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं में अद्वितीय है। अतः शैक्षिक पाठ्यक्रम में विभिन्न क्रियाकलापों का समावेश आवश्यक है, जिससे इनकी प्रतिभा को अभिव्यक्त

के अवसर प्राप्त हों। इन क्रियाकलापों में सहभागिता से विद्यार्थी अनुभवी एवं कुशल बनेंगे ऐसे क्रियाकलाप मनोरंजन के साथ-साथ उत्पादन हो एवं आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो परंतु अध्ययन ऐसे ही क्रियाकलापों पर आधारित है।

1.3 समस्या कथन

शिक्षा क्राफ्ट कार्य से संबंधित होनी चाहिए, यह विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल को बढ़ाने वाली होनी चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन की समस्याएं दो बिंदुओं पर आधारित हैं।

प्रथम -विद्यार्थियों का ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजनात्मक कौशल विकास।

द्वितीय - स्वच्छता के प्रति सकारात्मक एवं उपयोगी उपाये।

1.4 समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषिकरण

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण इस प्रकार है।

1.4.1 प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा जिसे प्रारंभिक शिक्षा भी कहा जाता है, यह बालवाड़ी से 5 कक्षा तक के बच्चों के लिए है। प्राथमिक शिक्षा छात्रों के विभिन्न विषयों की एक बुनियादी समझ के साथ-साथ कौशल भी प्रदान करती है जिसे वह अपने जीवन भर उपयोग करेंगे।

1.4.2 क्राफ्ट कार्य

क्राफ्ट कार्य एक व्यवसाय है जिसमें विशेष प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है। हिंदी में इसे हस्त कौशल, शिल्प, कारीगरी,शिल्प दस्तकारी आदि भी कहते हैं। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में छोटे स्तर पर हाथ से सामान बनाने वाले लोगों को शिल्प कार्य या क्राफ्ट कहते थे।

1.4.3 वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान में क्राफ्ट कार्य को लेकर जो देखने को मिल रहा है। प्राथमिक विद्यालयों में कला एवं क्राफ्ट विषय से संबंधित कोई अध्यापक शिक्षण कार्य नहीं कर रहा है। इससे बच्चों में क्राफ्ट कार्य विषय के प्रति रुचि भी नहीं ले रहे हैं। इसका कारण यह है कि या तो अध्यापक स्वयं क्राफ्ट के प्रति रुचि नहीं ले रहें हैं या तो वह बच्चों को सिखाने में रुचि नहीं ले रहें है। वर्तमान में क्राफ्ट कार्य विषय में रुचि लेने वाले बहुत ही कम शिक्षक मिलते हैं। जिससे भविष्य में बच्चों में भी यह कमी हो रही है।

1.4.4 भावी संभावनाएं

वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में क्राफ्ट कार्य को लेकर प्राथमिक विद्यालयों में अगर ऐसी ही स्थिति रही तो आगे आने वाले समय में क्राफ्ट के कार्य में कोई भी बच्चा रुचि नहीं लेगा और धीरे-धीरे क्राफ्ट कार्य का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

1. नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा तथा आलेखन कला एवं क्राफ्ट कार्य की विषय सामग्री का आलोचनात्मक अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की कलात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्ति का अवसर देना।
3. विद्यार्थियों में क्राफ्ट कार्य के माध्यम से आत्मनिर्भरता एवं स्वावलंबन के गुणों का विकास करना।
4. अनुपयोगी वस्तुओं से व्यवसायिक उपयोगिता की सृजन करना।
5. क्राफ्ट कार्य से संबंधित नवीनतम सामग्री का अध्ययन करना।
6. वर्तमान पाठ्यक्रम पुस्तकों में क्राफ्ट कार्य से संबंधित नवीन विषय सामग्री के समावेशन हेतु सुझाव देना।
7. विद्यार्थियों में **"करके सीखने"** की अभिवृद्धि का विकास करना।
8. प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना।

1.6 अध्ययन की परिसीमांकन

प्रत्येक विषय वस्तु अपने आप में विस्तृत है। समय एवं साधनों की उपलब्धता हमारे अध्ययन का स्वरूप निश्चित करती है, इसी स्वरूप में अध्ययन का विकास होता है। सीमांकन अध्ययन का दायरा निश्चित करता है। इसी दायरे के अंतर्गत ही अध्ययन का प्रारंभिक विकास एवं समापन होता है। प्रस्तुत शोध का परिसीमांकन इस प्रकार किया गया है।

1. प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 1, 2, 3, 4 एवं 5 में प्रचलित **"आर्ट एंड क्राफ्ट कला"** की पुस्तकों के अध्ययन तक सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में क्राफ्ट कार्य के विभिन्न प्रकारों में से कागज एवं माचिस के डिब्बे, गुब्बारे, आइसक्रीम की लकड़ी से बनने वाली उपयोगी एवं उत्पादक वस्तुओं के निर्माण तक सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन **'अतर्रा क्षेत्र'** के आदर्श लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय, रैपाल सिंह विद्यापीठ विद्यालय, सरस्वती शिशु ज्ञान मंदिर, गांधी पूर्व माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 3 के बालक एवं बालिकाओं द्वारा किए गए अभ्यास कार्य तक सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन यूपी बोर्ड तक सीमित है।

1.7 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

'करके सीखना'एवं 'अनुभव से सीखना' शिक्षण की सर्वाधिक प्रभावी विधियों में से एक है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान ही आवश्यक नहीं है। पुस्तकीय ज्ञान मस्तिष्क को विकसित करता है। मस्तिष्क एवं हृदय एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों का संतुलित विकास शिक्षा से होना अनिवार्य है।

हृदय अनुभूति का स्रोत है, जिसके लिए हमें विद्यार्थियों को उनकी रूचि के अनुसार अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है, जिससे उनके अंतस में छिपी प्रतिभा को अभिव्यक्ति मिल सके। अतः पाठ्यक्रम में मनोरंजनात्मक, कलात्मक, रुचिपूर्ण उपयोगी एवं उत्पादक क्रियाकलापों समावेशन आवश्यक है यह क्रियाकलाप पुस्तकीय ज्ञान से उत्पन्न उदासीनता को कम कर विद्यार्थियों में ऊर्जा का संचार करते हैं तथा उनके गुणात्मक स्तर में वृद्धि करते हैं।

क्राफ्ट कार्य की अवधारणा कार्य एवं शिक्षा के मध्य विद्यमान दूरी को कम करेगी। विद्यार्थियों में सामूहिकता, सहयोग,सामंजस्य,आत्मीयता आदि गुणों का विकास करेगी। आज विभिन्न विद्यालयों मे इस प्रकार के क्रियाकलापों का आयोजन किया जाता है परंतु उच्च कक्षाओं में भी इनसे संबंधित क्रियाकलापों का समावेशन आवश्यक है। यह क्रियाकलाप हृदय एवं मस्तिष्क दोनों का विकास कर उसे सुदृढ़ बनाने का कार्य करते हैं। उत्पादक कार्यों के माध्यम से विद्यार्थी समाज को अपनी महत्वपूर्ण सेवाओं को प्रदान कर सकते हैं। क्राफ्ट कार्य में मानसिक श्रम की अपेक्षा शारीरिक श्रम की प्रधानता है अतः यह सभी स्तर के विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है।

अध्ययन द्वितीय- संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1प्रस्तावना

संबंधित साहित्य का अध्ययन शोध अभिन्न अंग होता है, यह किसी शोधकर्ता के लिए समस्या विषय के रूप में पहुंचने का महत्वपूर्ण साधन है तथा अनुसंधान प्राथमिक आधार है। शोध प्रबंधन की वास्तविक योजना एवं उसके संचालन से पूर्व शोधकर्ता अपनी समस्या से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन इसलिए करता है क्योंकि यह उसे अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाया है।

संबन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। नए अनुसंधानकर्ता को इसके महत्व को समझना चाहिए।

गुड बार स्केट्स के अनुसार –‘‘योग्य चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र मे हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे इसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र के लिए भी उस क्षेत्र से संबन्धित सूचनाओं एवं खोज से परिचित होना आवश्यक है।’’

स्कॉट एंड वर्दीमर –‘‘संबन्धित साहित्य की समीक्षा से घिसी-पिटी समस्याओं पर अनुसंधानकर्ता को व्यर्थ श्रम से मुक्ति मिल जाती है और उसे नयी समस्याओं के समाधान हेतु इससे सहायता मिलती है।’’

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ताओं समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन किया जिसका औचित्य निम्न बिंदुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

- ❖ प्रस्तुत शोध समस्या से संबंधित पृष्ठभूमि तैयार करना।
- ❖ प्रस्तुत शोध से संबंधित प्रकरण की जानकारी प्राप्त करना।
- ❖ शोध कार्य की पूर्णता हेतु शोध समस्या से संबंधित उपयुक्त परिकल्पनाओं के निर्माण में सहायता प्राप्त करना।
- ❖ शोध, विधि, शोध अभिकल्प के निर्माण तथा मापन की उपयुक्त विधि एवं प्राविधि के चयन एवं विश्लेषण की जानकारी प्रदान करना।
- ❖ आंकड़ों के संग्रहण एवं विश्लेषण हेतु उपयुक्त सांख्यिकी की गणनाओं का चयन करने में सहायता।

शोधकर्ता के लिए शोध समस्या से संबंधित उपयुक्त निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है। संबंधित साहित्य सर्वेक्षण के द्वारा शोधकर्ता को अपने शोधकर्ता की स्पष्ट पृष्ठभूमि प्राप्त होती है निहित विभिन्न सिद्धांतों एवं धारणाओं को समझने में सहायता है। प्रस्तुत शोध मे शोधकर्ता उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के संदर्भ मे शिक्षा एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों का अध्ययन कर रहा है। अतः उसे यह जानना नितन्त आवश्यक है कि इस क्षेत्र मे कितना कार्य हो चुका है तथा उस कार्य की प्रकृति क्या है, जो कि संबन्धित साहित्य सर्वेक्षण के अध्ययन द्वारा ही संभव है।

2.2 क्राफ्ट कार्य से संबंधित शोध अध्ययन

2.2.1 हिमाचल प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर समाजोपयोगी उत्पादन कार्य कार्यक्रम: एक मूल्यांकन अध्ययन-

श्रीमान **'विमल चरण'** द्वारा लिखित **''शोध प्रबंध हिमाचल प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर समाजोपयोगी उत्पादक कार्य कार्यक्रम : एक मूल्यांकन अध्ययन''** सन 1992ई० में प्रस्तुत किया गया।

अध्ययन किए गए लघु शोध में हिमाचल प्रदेश के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में संचालित अति सूक्ष्म पहलुओं का विस्तार से विवेचन किया गया है। प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर हेतु एस यू पी डब्ल्यू से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों को चिन्हित किया गया है ऐतिहासिक एवं ऋण आत्मक विधि का

प्रयोग के साथ-साथ विद्यालयों में शिक्षा व्यवस्था को समझने के लिए प्रश्नावली का उपकरण के रूप में प्रयोग करके विद्यालयों की स्थित को दर्शाया गया है आधुनिक भारत के विद्यालय में विद्यालयों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के मूल्यांकन की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

भविष्य के लिए महत्वपूर्ण सुझावों को प्रस्तुत कर यह शोध प्रबंध अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

श्रीमती '**शीतल शर्मा**' द्वारा लिखित शोध प्रबंध **''छत्तीसगढ़ जनजातियों के आर्थिक विकास में हस्तशिल्प कला का योगदान''** सन 2016 में प्रस्तुत किया गया।

अध्ययन किए गए लघु शोध में छत्तीसगढ़ जनजातियों के आर्थिक विकास में हस्तशिल्प कला का योगदान **''बेल मैटल कास्ट''** का अध्ययन किया गया है हस्तशिल्प से संबंधित अतिशूक्ष्म पहलुओं का विस्तार से विवेचन किया गया है हस्तशिल्प प्राचीन काल से ही भारत में प्रचलित है यह भारतीय अर्थव्यवस्था ने काफी योगदान दिया वर्तमान में रोजगार का एक प्रमुख साधन रूप में बनाया गया है।

अब हस्तशिल्प पूरे भारत की अर्थव्यवस्था में योगदान दे रहा है आधुनिक भारत में विद्यालयों में हस्तशिल्प के मूल्यांकन पर प्रकाश डाला गया है इसके माध्यम से लोगों को रोजगार के अवसर के बारे में बताया गया है। भविष्य के लिए महत्वपूर्ण सुझाव को प्रस्तुत कर यह शोध प्रबंध अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2.2.3 **''कीर्ति शर्मा''**द्वारा लिखित शोध प्रबंध **''कच्छ की लोक कला एवं हस्तशिल्प: एक अध्ययन''** सन 2015 में प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन किए गए लघु शोध में कक्ष की लोक कला एवं हस्तशिल्प कार्य का अध्ययन किया गया है इसमें कक्ष की प्रायः प्रत्येक कला व शिल्प के क्रियाकलापों को चिन्हित किया गया है। इसमें ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है यह सौंदर्याभिव्यक्ति व्यक्ति का प्रमुख साधन **'कला'** है चाहे वह किसी भी माध्यम के रूप में हो यह दर्शाया गया है इस अध्ययन में कक्ष की लोक कलाओ व शिल्पों का प्रमुख आधार सिद्ध किया गया है, और प्रकृति के अभाव में प्रकृति का चित्रण इस क्षेत्र के रंगमंच पर प्रकाश डाला गया है भविष्य के लिए महत्वपूर्ण सुझाव को प्रस्तुत कर यह शोध प्रबंध अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2.2.4 **''छविराम शाह''** द्वारा लिखित शोध प्रबंध ''जनजातीय हस्तकलाएँ एक ऐतिहासिक अध्ययन''(बस्तर के विशेष संदर्भ में) सन् 2012 में प्रस्तुत किया गया। अध्ययन किए गए लघु शोध में

जनजातीय हस्तकलाएँ बस्तर के विशेष संदर्भ में विस्तार से विवेचन किया गया है। यह कर्इ जनजातियों, धर्मो हेतु हस्तशिल्प कलाओं से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों को चिन्हित किया गया है। इसमें ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें बस्तर के आदिवासी पुरुषों एवं महिलाओं की स्थिति के बारे में दर्शाया गया है और इसमें विशेष रूप से बस्तर अंचल की महिलाओं की ऐसी मान्यता है कि गोदना ही स्वर्ग में उनकी पहचान होती है। और आदिवासी बहुल बस्तर में अपनी गोदना परंपरा को बनाए हुए हैं। इस पर प्रकाश डाला गया है। भविष्य में सुझावों को प्रस्तुत कर यह शोध प्रबंध अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2.2.5 श्रीमती **''नीलम बिष्ट''** द्वारा लिखित शोध प्रबंध ''जनपद अल्मोड़ा का हस्तशिल्प एक अध्ययन स्वतंत्रता के पश्चात 2010 ई०) सन् 2015 में प्रस्तुत किया गया अध्ययन किए गए लघुशोध में जनपद अल्मोड़ा का हस्तशिल्प एक अध्ययन स्वतंत्रता के पश्चात 2010 ईस्वी में स्वतंत्रता के पश्चात के जनपद अल्मोड़ा में हस्तशिल्प का अध्ययन किया गया है। हस्तशिल्प के विभिन्न आयामों के विषय को स्पष्ट किया गया है और इसके अंतर्गत जनजातीय हस्तशिल्प द्वारा निर्मित वस्तुओं को स्पष्ट किया गया है एवं संवर्धन हेतु भारत सरकार द्वारा सहयोग एवं प्रशिक्षण का अध्ययन भी किया गया है यह शोध प्रबंधन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2.3 क्राफ्ट कार्य से संबंधित पुस्तक एवं लेख इत्यादि

एस.एस.गुप्ता (2013) ने प्रकाशित लेख में बताया है कि हस्तशिल्प उद्योग सच्ची भावना के साथ हमारी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है और भारतीय हस्तशिल्प में बहुत अधिक विविधता है हस्तशिल्प के माध्यम से 74 लाख लोगों को रोजगार मिलता है इस पर इन्होंने प्रकाश डाला है।

राकेश कुमार (2017) ने प्रकाशित लेख में उन्होंने हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के बढ़ते कदम और देश के निर्यात क्षेत्र में हस्तशिल्प उत्पादों की अहम भूमिका के बारे में बताया इसमें उन्होंने बताया कि क्राफ्ट कार्य से बनी वस्तुओं से लोगों को रोजगार प्राप्त होता है, और इनसे बना सामान सजावट में काम आता है।

Medha sudumbarkar (2017) इन्होंने अपनी पुस्तक *''आर्ट एंड क्राफ्ट 2''* में प्राथमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं को आर्ट एंड क्राफ्ट की शिक्षा देने के लिए उनके इस तर्क को देखकर विभिन्न प्रकार की क्राफ्ट चीजों का ब्यौरा दिया गया तथा इसमें क्राफ्ट से संबंधित वस्तुओं को बनाने के नियम भी बताए गए हैं।

S. Chandra (2015) इन्होंने अपनी पुस्तक *''आर्ट एंड क्राफ्ट मेड ईजी 3''* किताब में कला और क्राफ्ट की चीजों के बारे में बताया है इस पुस्तक में अनेक प्रकार के चित्र कला और क्राफ्ट से संबंधित चित्र और नियम बताए गए हैं। जिससे विद्यार्थियों को सीखने में सरलता हो सके। यह पुस्तक प्राथमिक स्तर के बालकों एवं बालिकाओं के लिए है।

Ramchandra Shukla (1964) मे इन्होंने अपनी पुस्तक कला के दर्शन मे कला के बारे मे बताया है कि कला क्या है। और इसमे यह बताया है कि शिल्प अधिकतर उन कार्यों को कहते हैं जिसमे भरी ठोस वस्तुएँ बनती हैं। बांस के बने समान या पत्तों से बनाए जाने वाले समान को भी क्राफ्ट का काम कहते है वास्तव मे शिल्प मे वस्तुए कच्चे माल के उपयोग से बनाई जाती है। और क्राफ्ट मे बनी हुई चीजों का इस्तेमाल होता है।

2.4 निष्कर्ष

उपर्युक्त वर्णित (पुस्तकों शोध दस्तावेज) साहित्य ने अध्ययन को मजबूत ऐतिहासिक आधार प्रदान करने में उपयोगी भूमिका निभाई है। इन संदर्भों में क्राफ्ट कार्य से संबंधित विभिन्न आयामों एवं क्षेत्रों का दृष्टिपात किया गया है वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से क्या अपेक्षाएं हैं इस पर भी दृष्टिपात किया गया है शिक्षा में बढ़ती विषमता को कम करने का प्रयास किया गया।

यह विचारणीय है कि इन सभी साहित्य एवं दस्तावेजों में क्राफ्ट कार्य से संबंधित क्रियाकलापों के प्रयोगात्मक अनुप्रयोगों का अभाव है। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन सभी साहित्यों में उपयोगी सामग्री लेते हुए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का अध्ययन कर विद्यालय पाठ्यक्रम में क्राफ्ट कार्य मनोरंजनात्मक निर्माण कार्य से संबंधित है।

तृतीय अध्याय- शोध अध्ययन की प्रक्रिया

3.1 शोध अध्ययन विधि

प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने के लिए किन्ही मान्य सिद्धांतों का अनुसरण करना अनिवार्य है, यही मान्य सिद्धांत अध्ययन को प्रमाणिकता प्रदान करते हैं। प्रत्येक अध्ययन एक विशेष प्रकार की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है अतः विभिन्न प्रकार की समस्याओं की प्रकृति के ऊपर निर्भर है कि अध्ययन कैसा होगा अथवा उसकी विधि क्या होगी? समुचित वैज्ञानिक निष्कर्ष के लिए तो सबसे अच्छा होगा कि अध्ययनकर्ता किसी समस्या से ऐतिहासिक पक्ष का विश्लेषण करें, वर्तमान का अध्ययन कर आवश्यकतानुसार प्रयोग भी करें इस प्रकार समन्वित प्रणाली ही सर्वोत्तम प्रणाली हैअधिकांश लोगों ने प्रयोगात्मक और प्रयोगात्मक शोध के लिए विभिन्न अध्ययन विधियों का विवरण प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है।

1. मूलभूत एवं व्यवहारिक शोध
2. व्यवहत शोध
3. प्राविधि शोध
4. ऐतिहासिक शोध
5. प्रयोगात्मक शोध
6. सर्वेक्षण शोध
   (a) वर्णनात्मक सर्वेक्षण
   (b) विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण
   (c) विद्यालय सर्वेक्षण
   (d) सामाजिक सर्वेक्षण

प्रत्येक अध्ययन विधि का अपना एक सीमित क्षेत्र है। चयनित अध्ययन विधि उसी क्षेत्र में प्रमाणित प्रमाण परिणाम दे सकती हैं जिस क्षेत्र तथा कार्य के लिए उसे अविष्कृत किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध की पूर्ति हेतु **ऐतिहासिक वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक** शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

1. **ऐतिहासिक शोध-** इसका सम्बन्ध भूत से है तथा भविष्य को समझने के लिए भूत का विश्लेषण करता है। अतः किसी समस्या घटना अथवा व्यवहारसे समुचित मूल्यांकन के लिए उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना आवश्यक है।

कर लिंगर के अनुसार- ''ऐतिहासिक अनुसंधान अतीत की घटनाओं विकासो तथा अनुभवो की समालोचनात्मक जांच है अन्य शोधकर्ताओं के समान ही ऐतिहासिक शोधकर्ता भी प्रदत संकलित करता है प्रदत्तो की वैधता हेतु उनकी जांच करता है तथा प्रदत्तों की विवेचना करता है।''

2. **वर्णनात्मक शोध-** शिक्षा तथा मनोविज्ञान संबंधी अनुसंधान के क्षेत्र में वर्णनात्मक शोध किया जाता है।

जान डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार- ''वर्णनात्मक अनुसंधान क्या है, का वर्णन तथा विवेचन करता है। इसका उन परिस्थितियों तथा संबंधों से संबंध है जो वर्तमान में है, अभ्यास जो लागू है।वे दृष्टिकोण या अभिवृत्तियाँ जिनको वर्तमान में माना जा रहा है। प्रक्रियाएँ जो चल रही हैं प्रभाव जिन की अनुभूति हो रही है तथा वे परंपराएं या दशाएं जो विकसित हो रही हैं।''

3. प्रयोगात्मक शोध-

कोई भी अनुसंधान कार्य जो किसी व्यवस्थित प्रयोग पर आधारित हो प्रयोगात्मक अनुसंधान कहलाता है।

3.2 अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दो प्रकार की समष्टि को समाहित किया गया है,

1. विद्यार्थी समष्टि
2. अध्यापक समष्टि

3.2.1 विद्यार्थी समष्टि

वर्तमान शोध समष्टि के अंतर्गत 5 से 10 वर्ष की आयु समूह के छात्र-छात्राएं समष्टि हैं जो कक्षा चतुर्थ उत्तीर्ण कर चुके होते हैं तथा बेसिक शिक्षा परिषद से संबंधित बांदा जनपद के प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 5 में अध्ययनरत हैं समष्टि के अंतर्गत समस्त जातियों, धर्मो, परिवारिक व्यवसायों में व्यक्तियों को समाहित किया गया है।

3.2.2 अध्यापक समष्टि

शिक्षक समष्टि के अंतर्गत बांदा जनपद के प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन कार्य में संलिप्त शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

3.3 न्यादर्श चयन विधि

शोध के संदर्भ में प्रतिदर्श चयन के निर्मित अर्ध संभव प्रतिदर्श चयन प्रविधि को ग्रहण किया गया तथा अंतिम रूप से प्रतिदर्श चयन के संदर्भ बहुस्तरीय प्रयोग चयन विधि का अनुसरण किया गया।बाँदा जनपद का चयन उद्देश्य पूर्ण शोध विधि द्वारा किया गया। जबकि शहरी तथा ग्रामीण अंचलों के प्राथमिक विद्यालय का चयन यादृच्छित विधि द्वारा किया गया है।

3.4 लक्षित न्यादर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श (Target Sample) के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया।

3.4.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया जा चुका है कि वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा बांदा जनपद के विद्यालयों का चयन किया गया है जिसके अंतर्गत अतर्रा नगर के 3 विद्यालय लिए गए हैं यथा आदर्श लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय, रैपार सिंह विद्यापीठ विद्यालय, सरस्वती शिशु ज्ञान मंदिर इन विद्यालयों के संदर्भ में छात्र-छात्राओं की जनसंख्या से संबंधित संपूर्ण स्थिति स्पष्ट हुई है।

3.4.2 विद्यालयों का चयन

बांदा जिला में स्थित अतर्रा नगर के 3 शैक्षणिक संस्थाओं की सामाजिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखते हुए आदर्श लवकुश विद्यालय, रैपार सिंह विद्यापीठ विद्यालय, सरस्वती शिशु ज्ञान मंदिर इन विद्यालयों के प्राथमिक स्तर के छात्र-छात्राओं को चयन किया गया है।

अतर्रा नगर में चयनित प्राथमिक विद्यालयों, में उन में अध्ययनरत कुल विद्यार्थियों तथा चयनित विद्यार्थियों की संख्या को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

क्रम संख्या	**चयनित प्राथमिक विद्यालय**	**कक्षा 5 में पंजीकृत विद्यार्थियो की संख्या**		**परीक्षण के समय उपलब्ध विद्यार्थियों की संख्या**	
		छात्र	**छात्राएं**	**छात्र**	**छात्राएं**
1	रैपार सिंह विद्यापीठ विद्यालय	40	30	6	5
2	लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय	20	15	4	3

3	गांधीपूर्व माध्यमिक विद्यालय	15	7	7	10
4	सरस्वती शिशु ज्ञान मंदिर	20	15	8	5
योग		95	67	25	23
		कुल योग		48	

3.4.3 प्रतिदर्श चयन

यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित प्राथमिक विद्यालयों में से लक्षित प्रतिदर्श चयन प्रयोगात्मक विधि द्वारा किया गया अर्थात परीक्षण प्रशासन के समय उपलब्ध समस्त विद्यार्थियों को प्रतिदर्श में सम्मिलित कर लिया गया शेष इकाइयों को अध्ययन में सम्मिलित न करने का कारण विद्यार्थियों की विद्यालय में अनुपस्थित अथवा सहभागिता तथा असहयोग था। अतर्रा में अवस्थित विद्यालयों की कक्षा एकादश में अध्ययनरत छात्र एवम छात्राओं को अध्ययन में इस कारण सम्मिलित किया गया, क्योंकि जीवन की यह अवस्था में बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक परिवर्तन एवं विकास तीव्र गति से होता है। कदाचित बालक स्वयं भी उक्त परिवर्तनों के प्रति सचेत नहीं होता है जिसके परिणाम स्वरुप उसे अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसके समाधान हेतु उसे निर्देशन तथा सहायता की आवश्यकता पड़ती है। इसके अतिरिक्त व्यावसायिक निर्णय भी इसी स्तर पर किए जाते हैं।

चयनित प्रतिदर्श का लिंगानुपात वितरण

विद्यालय	**छात्र**	**छात्राएं**	**योग**
रैपार सिंह विद्यापीठ विद्यालय अतर्रा	6	5	11
सरस्वती शिशु ज्ञान मंदिर विद्यालय अतर्रा	8	5	13
गांधी पूर्व माध्यमिक विद्यालय अतर्रा	7	10	17
सरस्वती शिशु ज्ञान मन्दिर अतर्रा	8	5	13
योग	29	25	54

कुल चयनित 54 विद्यार्थियों में से मात्र 45 विद्यार्थी ऐसे थे जिन्होंने समस्त परीक्षणों को पूर्ण किया है।

3.5 प्रयोगों का प्रदर्शन एवं प्रशासन प्रयोगों का प्रदर्शन एवं प्रशासन शोधार्थी द्वारा दो चरणों में किया गया। प्रथम चरण में विद्यार्थियों पर परीक्षण प्रशासित किए गए द्वितीय चरण में शिक्षकों पर शिक्षक अपेक्षा प्रयोग का प्रशासन किया गया।

सर्वप्रथम चयनित प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं अध्यापकों से आज्ञा प्राप्त की गई। तत्पश्चात प्रयोगों को प्रशासित करने से पूर्व चयनित कक्षाओं के विद्यार्थियों से शोधार्थी द्वारा सौहार्द्ध संबंध स्थापित किए गए एवं उनको शोध उद्देश्यों से परिचित कराया गया।सम्बंध स्थापन के पश्चात विद्यार्थियों को सभी प्रयोगात्मक समान एक-एक करके वितरित किया गया। सभी प्रयोगों का प्रशासन 5 दिन की समयावधि में समाप्त किया गया और क्राफ्ट कार्य से संबंधित अनेक प्रकार की सामग्रियां बनाई और विद्यार्थी द्वारा समस्त क्राफ्ट कार्य पूर्ण करने के पश्चात उन्हें एकत्र कर लिया गया तथा उनके सहयोग के लिए धन्यवाद प्रेषित किया गया।

अध्ययन में सहभागी शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ औपचारिक शिक्षण के लगभग पांच से छह माह सफलता पूर्वक संपूर्ण कर चुके थे तथा कक्षा विशेष के विद्यार्थियों से भली-भांति परिचित हो चुके थे।

अतः शिक्षकों के लिए अपने विद्यार्थियों के वर्तमान तथा भावी शैक्षिक सफलता एवं विफलता अथवा उनकी उपलब्धि के संदर्भ में सूचनाएं देना सरल कार्य था, अतः हमारे द्वारा संबंधित कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षक अपेक्षा क्राफ्ट कार्य का समान वितरण कर उनको निर्देशानुसार पूर्ण होने के पश्चात हमारे द्वारा क्राफ्ट कार्य की वस्तुएँ जो प्रयोग में लाई गई हैं। उनको एकत्रित कर समस्त शिक्षकों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

चतुर्थ अध्याय- चयनित क्राफ्ट कार्य का प्रयोग

4.1 Leaf Zoo

आवश्यक सामग्री-पीपल की पत्ती, फेवीकोल, कैंची, एक सफेद कागज।

स्रोत– इंटरनेट।



चित्र सूची –4.1.1



चित्र सूची –4.1.2

प्रथम चरण Leaf Zoo बनाने के लिए एक लंबी पीपल की पत्ती को बीच से हाथ की सहायता से सीधे तोड़ते हैं। इससे कैट की बॉडी बनाते हैं और दूसरी पति को ऊपर भी आकार में हाथ की सहायता से तोड़ते हैं और पीछे की डंडी निकाल देते हैं।

द्वितीय चरण एक सफेद कागज में फेविकोल की सहायता से जो हम कैट की बॉडी चिपकाएँगे इसके बाद दूसरी पत्ती जो v आकार की है उसको कैट की बॉडी के आगे की ओर चिपका देते हैं। leaf zoo बनकर तैयार है।

ट्राई आउट - आदर्श लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय अतर्रा

परिणाम-सफल

4.2 Ice- cream stick bomb

आवश्यक सामग्री- Ice-cream, sticks, फेविकोल।

स्रोत- इंटरनेट।



चित्र सूची –4.2.1



चित्र सूची –4.2.2

प्रक्रिया- Ice-cream stick bomb बनाने के लिए पांच ice-cream stick को लेते हैं। सबसे पहले हम दो स्टिक को A के आकार में फेविकोल की सहायता जोड़ते हैं, और फिर उसके बाद तीसरी स्टिक को दो स्टिक के बीच मे जोड़ते है और फिर इसके बाद चौथी स्टिक को लेकर दो स्टिक में क्रासबार की तरह पीछे साइड से अटैच करते हैं। उसके बाद पाँचवी स्टिक को लेकर नीचे की तीनों स्टिक मे जोड़ते हैं और आगे की ओर अटैच कर सेकण्ड इंटरलॉक की तरह बनाते हैं। इस प्रकार **Ice- cream stick bomb** बनकर तैयार है।

ट्राई आउट –लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय, अतर्रा

परिणाम – सफल

4.3- Cool wool

आवश्यक सामग्री- माचिस की डिब्बी, सुई, दो कलर के उन 60 सेंटीमीटर।

स्रोत- इंटरनेट ।

प्रक्रिया– Cool wool बनाने के लिए सर्वप्रथम एक माचिस लेंगे और उस माचिस के कवर और डिब्बे को अलग-अलग कर लेंगे। उसके बाद उनको सुई में डालेंगे



चित्र सूची –4.3.1



चित्र सूची –4.3.2

और माचिस के डिब्बे में पहले एक तरफ से ग्रीन उनको सुई की सहायता से डिब्बे में एक तरफ से छेद करके सुई की सहायता से बाहर क्यों निकालेंगे। यह प्रक्रिया दूसरी तरफ भी करेंगे फिर बाहर निकले उनमें गांठ लगा देंगे और कव्र को दोनों तरफ डिब्बे में फिर से ढक देंगे। इस प्रकार cool wool बन कर तैयार हो जाता है।

ट्राई आउट- लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय, अतर्रा।

परिणाम - सफल

4.4- STRETCHABLE STOMACH

आवश्यक सामग्री- माचिस की डिब्बी, फेवीकोल, सफेद कागज, दो कलर।

स्रोत-इंटरनेट

प्रक्रिया- STRETCHABLE STOMACH बनाने के लिए माचिस के डिब्बे और कवर को अलग अलग करलें फिर



चित्र सूची –4.4.1

डिब्बे और कवर में सफेद कागज फेविकोल की सहायता से चिपकाएंगे फिर दोनों डिब्बे में कलर की सहायता से बिल्ली का चित्र बनाएंगे मुंह से लेकर पेट तक का चित्र माचिस के कवर पर बनाएंगे और पेट से लेकर 5 तक का चित्र माचिस के अंदर डिब्बे पर बनाएंगे। यह चित्र काले पेन की सहायता से बनाएंगे फिर उन चित्र के अंदर हल्का मेहरून पेंसिल कलर करेंगे और यह STRETCHABLE STOMACH बनकर तैयार हो गया।



चित्र सूची –4.4.2

ट्राई आउट– लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय, अतर्रा।

परिणाम- सफल

4.5 SHIMMERING MATCHBOX



चित्र सूची –4.5.1

आवश्यक सामग्री- पेपर क्लिप, माचिस की डिब्बी, मोती, सफेद धागा।

प्रक्रिया – SHIMMERING MATCHBOX बनाने के लिए सर्वप्रथम एक माचिस की डिब्बी लेंगे उसके बाद दो पेपर क्लिप को माचिस के कवर के ऊपर की ओर और नीचे की ओर दोनों किनारों में लगा देंगे। फिर दोनों पेपर क्लिप के अंदर धागा डालेंगे और उसके बाद धागे मे दो छोरों पर मोती बांध देंगे और SHIMMERING MATCHBOX बनकर तैयार हो गया।

ट्राई आउट- गांधी पूर्व माध्यमिक विद्यालय, अतर्रा।

परिणाम- सफल।

4.6- NO KNOT AIR BALLOON



चित्र सूची –4.6.1

आवश्यक सामग्री– 5cm × 5cm एक दफ्ती का टुकड़ा, एक गुब्बारा, धागा, कैंची।

स्रोत- इंटरनेट



चित्र सूची –4.6.2

प्रक्रिया- NO KNOT AIR BALLOON बनाने के लिए सर्वप्रथम 5cm × 5cm की एक दफ़्ती का टुकड़ा लेंगे और उसके बाद कैंची की सहायता से उस टुकड़े के बीच में एक छोटा सा छेद करेंगे। फिर गुब्बारे को लेकर उसे मुंह की सहायता से बुलाएंगे और उसके बाद गुब्बारे के किनारे धागा बांधकर दफ्ती के बीच में जो छेद है उसके अंदर धागा डाल कर बाहर की ओर निकालेंगे और फिर धागे

में गांठ लगा देंगे। इस प्रकार NO KNOT AIR BALLOON बनकर तैयार हो गया।

ट्राई आउट- सरस्वती शिशु ज्ञान मंदिर अतर्रा।

परिणाम- सफल

4.7- BOTTLE BAG



चित्र सूची –4.7.1

आवश्यक सामग्री- एक प्लास्टिक बैग, एक कैंची, एक प्लास्टिक बोतल, थर्माकोल बॉल।

स्रोत - इंटरनेट

प्रक्रिया- BOTTLE BAG बनाने के लिए सबसे पहले बोतल को आगे की ओर से 2 इंच की दूरी पर काटेंगे और उसके बाद प्लास्टिक का बैग लेंगे और उसमें थर्माकोल बॉल भरेंगे और फिर भरने के बाद प्लास्टिक के बोतल को बैग के ऊपर लगाएंगे बोतल को अंदर से निकाल कर बाहर की ओर निकालेंगे फिर नीचे के तरफ मोड देंगे और बोतल के ऊपर कैप लगा देंगे। इस प्रकार **BOTTLE BAG** बनकर तैयार हो गया।



चित्र सूची –4.7.2

ट्राई आउट– लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय, अतर्रा।

परिणाम- सफल।

4.8 SPINNER FROM SCRAP



चित्र सूची –4.8.1

आवश्यक सामग्री- एक DVD, एक प्लास्टिक की बोतल, कैंची, फैविकोल, साइकिल की तिल्ली, मोती।

स्रोत- इंटरनेट

प्रक्रिया-

प्रथम चरण- SPINNER FROM SCRAP बनाने के लिए सबसे पहले बोतल मे कैंची की सहायता से बोतल मे स्पायरल कूट लगाएंगे,उसके बाद DVD को बीच से सीधे लाइन मे काटकर उसे दो टुकड़ो मे कर देंगे।

दूसरा चरण - बोतल को लेंगे और उसके कटी हुई DVD को बोतल जो स्पायरल आकार मे कटी थी उसमे दोनों तरफ लगा देंगे, उसके बाद फेविकोल की सहायता से चिपका देंगे फिर उसके बाद साइकिल की तिल्ली को बोतल के नीचे से छेद करके सीधे ऊपर की ओर निकाल लेंगे और फिर ऊपर की तिल्ली पर मोती डाल देंगे और बोतल को कलर टेप की सहायता से सुन्दर और आकर्षक बाना देंगे। इस प्रकार **SPINNER FROM SCRAP** बनकर तैयार है।

ट्राई आउट- सरस्वती शिशु ज्ञान मंदिर, अतर्रा।

परिणाम- सफल

4.9- BOTTLE PLANTER



चित्र सूची –4.9.1

आवश्यक सामग्री - प्लास्टिक बोतल, कैंची, धागा।

स्त्रोत- इण्टरनेट

प्रक्रिया- BOTTLE PLANTER बनाने के लिए सबसे पहले बोतल को ऊपर की ओर से 10 सेंटीमीटर पर काटेंगे और उसके बाद बोतल के कैप के बीच में कुछ छेद करेंगे। और उसके बाद तीन कटी हुई बोतलें मैं ऊपर की ओर तीन-तीन छेद करेंगे और उसके बाद तीनों कटी बोतलों में और उनके छेदो में धागा बांधेगे और उसके बाद कटी हुई बोतलों में मिट्टी डालेंगे और उसके बाद मिट्टी में थोड़ा पानी डालेंगे उसके बाद मिट्टी में थोड़ा पानी डाल देंगे फिर उसमें छोटे-छोटे पौधे लगा देंगे इस प्रकार बोतल प्लांट बनकर तैयार हो गया।



चित्र सूची –4.9.2

ट्राई आउट- रैपार सिंह विद्यापीठ विद्यालय अतर्रा।

परिणाम - सफल।

4.10- STRETCHABLE NECK

आवश्यक सामग्री- माचिस की डिब्बी, सफेद कागज, कलर स्केज, फेवीकोल।

स्रोत- इंटरनेट



चित्र सूची –4.10.1



चित्र सूची –4.10.2

प्रक्रिया माचिस के डिब्बे और कवर में सफेद कागज फेवीकोल की सहायता से चिपकाएंगे फिर दोनों डिब्बों में चित्र बनाएंगे, जिराफ की गर्दन का चित्र माचिस के डिब्बे पर बनाएंगे और गर्दन से नीचे का पूरा शरीर का चित्र माचिस के कवर पर बनाएंगे और फिर कलर पेंट की सहायता से उसे कलर करेंगे और इस प्रकार STRETCHABLE NECK बनकर तैयार हो गया।

ट्राइ आउट- लवकुश पूव माध्यामक ावद्यालय अतर्रा।

परिणाम- सफल ।

4.11- COOL BOTLE

आवश्यक सामग्री 1.5 लीटर की प्लास्टिक बोतल और 1 लीटर की प्लास्टिक बोतल, एल्युमीनियम, दो कलर के टेप, कटर, फीता, न्यूज़पेपर।

स्रोत- इंटरनेट



चित्र सूची – 4.11.1

प्रक्रिया- एक लीटर बोतल में एल्यूमीनियम को बोतल के बाहर पूरी तरह से लपेट देंगे फिर इसके बाद न्यूज़पेपर को लपेट देंगे अब 1.5 लीटर प्लास्टिक की बोतल लेंगे और ऊपर की ओर से 3 इंच पर काटेंगे और उसके बाद कटर की सहायता से 1 इंच पर कैप की जगह पर काटेंगे। न्यूज़पेपर लगी बोतल को खाली



चित्र सूची – 4.11.2

बोतल में ऊपरी भाग पर कटी हुई खाली बोतल का मुंह लगा देंगे और टेप की सहायता से बोतल को चिपका देंगे, फिर फीते को बोतल की डोर बनाकर लगा देंगे इस प्रकार COOL BOTTLE बनकर तैयार हो गया।

ट्राई आउट- रैपार विद्यापीठ विद्यालय, अतर्रा।

परिणाम- सफल।

4.12 IRRIGATION LADLE

आवश्यक सामग्री- टी कप, रंगीन धागा, सफेदा का, साइकिल की तिल्ली

स्रोत – इंटरनेट

प्रक्रिया – IRRIGATION LADLE बनाने के लिए सबसे पहले एक टी कप लेंगे और उसमें मुंह की तरफ बराबर में आमने-सामने दो छेद करेंगे और उसमें सफेद धागा बांधेंगे और फिर उसके बाद नीचे की तरफ दो छेद करेंगे और उसमें रंगीन धागा बांधने के फिर साइकिल की तिल्ली लेंगे और उसमें चारों धागों को बांध देंगे। इस प्रकार IRRIGATION LADLE बनकर तैयार हो गया।

ट्राई आउट– लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय, अतर्रा।

परिणाम – सफल।



चित्र सूची –4.12.1

पंचम अध्याय- प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में क्राफ्ट कार्य

5.1 क्राफ्ट कार्य के पाठ्यक्रम में स्थान

शिक्षा बालक एवं बालिका को संपूर्ण जीवन के लिए तैयार करती है, लेकिन परम्परागत शिक्षा संस्थानों में दी जाने वाली शिक्षा शब्द जीविकोपार्जन के लिए पूर्ण नहीं है। समान शिक्षा इस उद्देश्य के लिए अपूर्ण है। क्राफ्ट कार्य को विविधतायुक्त पाठ्यक्रम की शिक्षा देने का सुझाव दिया जाता है।

Nation Review committee के अनुसार संपूर्ण शिक्षण समय का 50% व्यावहारिक कार्यों, (Practical works) में व्यय किया जाना चाहिए विशेष ध्यान स्व-नियोजन पर दिया जाना चाहिए।

कक्षा 1 से 5 तक संपूर्ण विद्यालय पाठ्यक्रम का लगभग 20% क्राफ्ट कार्य में व्यय किया जाना चाहिए।NCERT के प्रसिद्ध दस्तावेज, प्राथमिक शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम क्राफ्ट कार्य पाठ्यक्रम 1 से 5 तक विद्यालयों में 8कलांशों में से 45 मिनट का समय क्राफ्ट कार्यों को दिया जाना चाहिए। खाली कालांश के बेहतर उपयोग के लिए इनका आयोजन किया जा सकता है।

NCERT का दस्तावेज **"क्राफ्ट कार्य"** आदर्श पाठ्यक्रम इकाई (1979.P7) के अनुसार विद्यालय की संपूर्ण कार्य अवधि में कम से कम 15 मिनट समुदाय कार्यों पर व्यय किया जाना चाहिए।एक दो खाली कलांशों को एक कर इनका कार्यान्वयन किया जा सकता है।

5.2 क्राफ्ट कार्य का प्राथमिक विद्यालय में क्रियान्वयन

वर्तमान में विद्यालय शिक्षा से ज्ञान के साथ-साथ कौशल विकास होना भी आवश्यक है प्राथमिक स्तर में क्राफ्ट कार्य कार्यक्रम आवश्यक है।प्राथमिक विद्यालयों में क्रियाकलापों का आयोजन कराया जाए। परंतु यह बात विचारणीय है कि कोई भी मुख्य अध्यापक शिक्षा के एवं शैक्षिक प्रशासन क्राफ्ट कार्यों की सूची का अंधानुकरण नहीं करेंगे। अतः यह वांछनीय है कि इस योजना के संबंध में शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं मॉनिटरों से विचार-विमर्श किया जाए। समुदाय में स्थित पंचायत, राजनैतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं, सरकारी अफसरों, स्वायत्तशासी संगठनों से वार्तालाप किया जाए क्राफ्ट कार्य से संबंधित क्रियाकलापों का आयोजन करने से पूर्व शिक्षकों को तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

प्रथम विद्यालय में उपलब्ध आर्थिक संसाधनों के अनुसार क्रियाकलापों का आयोजन करना।

द्वितीय कार्यकारी स्टाफ के अतिरिक्त कोई अन्य शिक्षक की उपस्थिति अनिवार्य नहीं।

तृतीय क्राफ्ट कार्य कार्यक्रम स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए।

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विभिन्न विद्यालयों में पढ़ने वाले बालक बालिकाओं के लिए प्रथक-प्रथक क्रियाकलापों का आयोजन की किया जाना चाहिए। वातावरण के अनुसार शिक्षकों को यह समझना आवश्यक है कि कौन से क्रियाकलाप अनिवार्य हैं, कौन से होने चाहिए एवं कौन से क्रियाकलाप हो सकते हैं?

5.2.1 क्राफ्ट कार्य का चयन

क्राफ्ट कार्य का चयन निम्नलिखित है -

1. विद्यार्थियों के विकास के स्तर के अनुसार होना चाहिए।
2. विद्यार्थियों को प्रासंगिक ज्ञान एवं कौशल देने में सहायता करने वाली होना चाहिए।
3. विद्यार्थियों के रूचि के अनुरूप होना चाहिए।
4. विद्यार्थियों को क्राफ्ट कार्य का सामान आसानी से प्राप्त हो सके।
5. आत्मानुभूति की प्रक्रिया में मदद करने वाली होना चाहिए।

5.2.2 ध्यान देने योग्य बातें

ध्यान देने योग्य बातें निम्नलिखित है -

1. विद्यार्थियों के विकास के स्तर को ध्यान में रखकर कार्य होना चाहिए।

2. विकासात्मक आवश्यकता का संपूर्ण ध्यान रखने वाली होना चाहिए।

3. समस्या समाधान कौशल एवं सृजनात्मकता से सम्मिलित नियोजित उपक्रम तथा मूल्य निर्माण में सहायक होनी चाहिए।

4. विद्यार्थियों को प्रासंगिक ज्ञान एवं कौशल देने में सहायता करने वाले होना चाहिए।

5. संबंधित क्रियाकलाप उत्पादन होना चाहिए तथा उसका परिणाम विद्यार्थियों समुदाय तथा विद्यालय समुदाय के लिए प्रत्यक्ष रूप से उपयोगी हो तथा विक्रय योग्य हो।

6. सेवाओं में सामाजिक तथा आर्थिक मूल्यों का समावेशन हो क्रियाकलाप समुदाय तथा व्यक्तिगत आवश्यकता का परस्पर ध्यान रखने वाली होना चाहिए।

5.3 विद्यालयों मे क्राफ्ट कार्य का मूल्यांकन

क्राफ्ट कार्य क्रियाकलापो का विद्यालया मे मूल्यांकन करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं का ध्यान रखना आवश्यक है –

1. विद्यार्थियों की आयु
2. कक्षा का स्तर
3. विद्यालय का आकार
4. विद्यालय का तात्कालिक वातावरण
5. शिक्षण अधिगम बेहतर बनाने के लिए पर्याप्त समय अंतराल पर सदस्यों द्वारा क्रियाकलापों का मूल्यांकन किया जाए, जिससे अवरोधों को दूर किया जा सके।
6. जितना संभव हो सके क्रियाकलापों का मूल्यांकन उसी शिक्षक के द्वारा किया जाए जो कक्षा-कक्ष मे क्रियाकलापों को आयोजित करते है।
7. एक त्रिबिन्दु मापनी जैसे उत्कृष्ट, अच्छा संतोषजनक अथवा 5 बिन्दु मापनी जैसे उत्कृष्ट, अच्छा, संतोषजनक, निम्न, अतिनिम्न के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
8. आकलन अन्य विषयों के समान लिखित रूप में न स्वीकार कर समझ तथा कार्य की निष्पत्ति के आधार पर किया जाए।

5.4 पाठ्यक्रम में समावेशन हेतु सुझाव

विद्यालय में पाठ्यक्रम में प्रचलित **''नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा''**तथा आलेखन कला की पाठ्य पुस्तकों में शारीरिक अभ्यास, चित्रकला एवं आलेखन कला के ज्ञान के साथ-साथ अत्यंत सामान्य क्रियाकलापों का समावेश है, जिनके अनुपालन में ना तो विद्यालय तत्पर है और ना ही विद्यार्थी।अतः आवश्यकता है कि पाठ्यक्रम में कुछ नवीन रुचि पूर्ण एवं उपयोगी क्रियाकलापों का समावेश किया जाए। प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में क्राफ्ट कार्य से संबंधित कुछ नवीन क्रियाकलापों के समावेशन हेतु सुझाव दिया गया है जो इस प्रकार है।

1. कक्षा-कक्ष की मेज कुर्सी के साथ-साथ चारों तरफ स्वच्छता रखना।
2. विद्यालय परिसर में पेड़ों से गिरी हुई पत्तियों को खाद के गड्ढे में डालना।
3. मिट्टी से प्रतिमान निर्माण।

4. पेपर को मोड़ना एवं हस्तशिल्प कार्य।
5. पेपर को विभिन्न प्रकार से ज्यामितीय आकार देने के लिए पेन, चाकू, पेंसिल, कटर एवं कैंची का उपयोग करना।
6. किताबों में जल्द चढ़ाना।
7. वृक्षारोपण।

षष्ठ अध्याय - निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शिक्षा वही है जो सर्वांगीण विकास में सहयोग दे, अर्थात शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक एवं कौशल का विकास करें। यह विचारणीय है कि क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली इन विभिन्न पक्षों का संतुलित विकास करती है। यह केवल एक पक्ष का प्रस्तुत अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उजागर हुए।

1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली ज्ञानात्मक पक्ष पर अधिक बल देती है भावात्मक एवं कौशलात्मक लक्ष्य उपेक्षित स्थित में है।
2. विद्यालय पाठ्यचर्या में सह-पाठ्यगामी क्रियाओं के आयोजन के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण उदासीनता पूर्ण है।
3. विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित **"नैतिक खेल एवं शारीरिक शिक्षा"** तथा क्राफ्ट कार्य की विषय वस्तु को व्यवहारिक रूप नहीं दिया जाता है।
4. शिक्षकों का सम्पूर्ण ध्यान विषय आधारित शिक्षा देने के प्रति रहता है, विद्यार्थियों की आंतरिक प्रतिभाओं को उभारने के प्रयास नगण्य है।
5. शासकीय विद्यालयों की स्थित अशासकीय विद्यालयों की अपेक्षा अधिक दयनीय है। वहां का शिक्षण अधिगम वातावरण प्रभावी एवं निम्न है शिक्षकों में शिक्षण कौशल तथा शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए किए जाने वाले प्रयास श्रेयस्कर नहीं है।

6.2 अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

जीवन में संतुलन आवश्यक है तथा संतुलित जीवन के लिए कला पक्ष का विकास होना आवश्यक है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने में अद्वितीय हैं, प्रतिभा संपन्न है। यह परिवार शिक्षकों एवं समाज की जिम्मेदारी है कि उन्हें बेहतर अवसर उपलब्ध कराए ताकि उनकी प्रतिभा का विकास हो सके जिससे उनके गुणों से समाज लाभान्वित हो सके। विद्यालय को विद्यार्थी की निर्माणशाला माना जाता है तथा शिक्षकों को निर्माता। अतः परिवार एवं समाज की दृष्टि विद्यालयों पर रहती है विद्यालय का कक्षा-कक्ष विभिन्नता युक्त संक्षिप्त समाज है जिसमें सभी विद्यार्थियों को एक समान शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ यह आवश्यक है कि व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान रखते हुए कुछ क्राफ्ट कार्य से संबंधित क्रियाकलापों का आयोजन किया जाए।

कक्षा में विद्यार्थियों के समूह बनाएं जाए तथा उन्हें रुचि एवं योग्यता के अनुसार छोटे-छोटे कार्य सौपे जाएं जैसे वृक्षारोपण, विद्यालय स्वच्छता, कार्यक्रम, पेपर एवं गत्ते से नवीन वस्त्र निर्माण, अनुपयोगी वस्तुओं का पुनर्चक्रण एवं उपयोगी तथा गुणात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन आदि। ऐसे विभिन्न क्रियाकलाप विद्यार्थियों में विद्यालय के प्रति आकर्षण को बढ़ाते हैं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर एवं मनोरंजनात्मक बनाते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में ऐसे ही कुछ उपयोगी एवं क्राफ्ट कार्य कार्यों का समावेश किया गया है जो एक तरफ कक्षा-कक्ष के बोझिल वातावरण को रुचिपूर्ण बनाते हैं दूसरी तरफ का कार्य गुणात्मक, उपयोगी, उत्पादक कार्य कौशल को बढ़ाने वाले हैं। विद्यालय पाठ्यचर्या में इन क्रियाकलापों के समावेश से विद्यार्थियों में सामंजस्य, सामूहिकता, सहयोग,सौहार्द एवं मैत्री की भावना का विकास होगा।

विद्यार्थियों में पुन: चक्रण, पुनः निर्माण तथा पुनः उपयोग की अवधारणा के प्रति समझ विकसित होगी।

प्रस्तुत अध्ययन विद्यालयी पाठ्यचर्या के समीक्षात्मक पुनरावलोकन तथा पाठ्यक्रम में अतिरिक्त सह-पाठ्यगामी क्रियाओं के समावेशन पर आधारित है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को बेहतर और प्रभावी बनाने के लिए सप्ताह में 2 दिन जैसे गुरुवार एवं शनिवार को विभिन्न क्रियाकलापों का आयोजन किया जाना आवश्यक है तभी विद्यार्थियों की आंतरिक प्रतिभा निखर सकेगी एवं उनका सर्वांगीण विकास हो पाएगा।

6.3 अध्ययन के सुझाव

1. प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्य पुस्तक क्राफ्ट कार्य क्रियाकलापों का स्थान।

2.विद्यालयों में क्राफ्ट कार्य के विशिष्ट आयामों से संबंधित अतिरिक्त पाठ्य पुस्तकों का पाठ्यक्रम में स्थान।

3. छात्र-छात्राओं हेतु प्रथक कौशलात्मक क्रियाकलापों की व्यवस्था।

4. विद्यार्थियों द्वारा निर्मित क्राफ्ट कार्य से संबंधित वस्तुओं का विद्यालय मेले में प्रदर्शन जिससे उनमें आत्मविश्वास तथा अन्य विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा का संचार होगा।

5. पांच विद्यालय द्वारा आयोजित रचनात्मक कार्यों में अनुपयोगी वस्तुओं से नवीन उपयोगी वस्तुओं का निर्माण।

6. विद्यार्थियों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यो को पुरस्कृत कर उनकी प्रतिभा को सम्मानित करना।

7. विद्यालय द्वारा समय-समय पर क्राफ्ट कार्य के विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित कार्यशाला का आयोजन।

8. क्राफ्ट कार्य के विभिन्न आयामों में दक्षता प्राप्त कर उन्हें जीविकोपार्जन के साधन के रूप में अपनाना।

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

समय एवं साधनों के अभाव ने प्रस्तुत अध्ययन को सीमित कर दिया है अन्यथा हर विषय वस्तु एवं समस्या अपने आप में विस्तृत है। शोधार्थी ने समस्या के समाधान हेतु सीमित पहलुओं पर दृष्टिपात किया है, जिसके परिणाम स्वरूप कई अन्य उपयोगी पहलू अध्ययन के प्रभाव क्षेत्र से अछूते रह गए। यह विश्वास किया जाता है कि भविष्य में इस क्षेत्र में अध्ययन करने वाले शोधार्थी उन पहलुओं को अपने अध्ययन में अवश्य शामिल करेंगे। उनके द्वारा दिया गया अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में दूरगामी परिणामों के साथ एक नवीन संकल्पना के रूप में उजागर होगा।

भावी शोधार्थियों से आशा की जाती है कि वह भविष्य में अपने अध्ययन में निम्नलिखित क्षेत्रों को शामिल करेंगे।

1. प्रस्तुत अध्ययन "अतर्रा" क्षेत्र के 4 विद्यालयों तक सीमित है भावी शोधार्थी अन्य क्षेत्रों के विद्यालयों को अध्ययन में शामिल कर अध्ययन को अधिक उपयोगी एवं प्रभावी बना सकते हैं।

2. प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः लवकुश पूर्व माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत बालक और बालिकाओं द्वारा किए गए क्रियाकलापों तक सीमित है भविष्य के शोधार्थी ऐसे क्रियाकलापों को इसमें शामिल करें जो बालक बालिका के लिए उपयोगी और सार्थक हो।

3. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में प्राथमिक स्तर के बालक और बालिकाओं को लिया गया है भावी शोधार्थी माध्यमिक स्तर एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को शामिल कर सकते हैं।

4. प्रस्तुत अध्ययन क्राफ्ट कार्य के क्षेत्रों में से एक क्षेत्र "पुनर्निर्माण" पर आधारित है। भावीशोधार्थी इसके अन्य क्षेत्रों को भी अध्ययन में शामिल कर सकते हैं।

5. प्रस्तुत अध्ययन कागज, पेपर एवं पत्तियों आदि से निर्मित क्राफ्ट कार्य के निर्माण तक सीमित है। भविष्य के शोधार्थी इसमें झूठ, सरकंडा, अनुपयोगी वस्तु से निर्मित नवीन वस्त्र निर्माण को शामिल कर सकते हैं।

इस प्रकार प्राप्त कार्य की अवधारणा विस्तृत है जॉन०डी० ने विद्यार्थियों मे क्राफ्ट कौशल के विकास पर बल दिया। बच्चे समाज से निकलकर विद्यालयों मे जाते हैं तथा पुनः विद्यालयों से निकालकर समाज मे जिम्मेदार नागरिक के रूप मे संस्कृति को सुरक्षित रखते है, तथा संभव परिमार्जन करते हैं।

Webliography

1. http://surl.li/jvnvg

2. http://surl.li/jvnwf

3. http://surl.li/jvnwp

4. http://surl.li/jvnxa

5. http://surl.li/jvnxs

6. http://surl.li/jvnyy

7. http://surl.li/jvoag

8. http://surl.li/jvoap

9. http://surl.li/jvnzu

10. http://surl.li/jvnzu

11.http://surl.li/jvnzq

परिशिष्ट

बांस, काष्ठ शिल्प प्रदर्शनी आयोजित



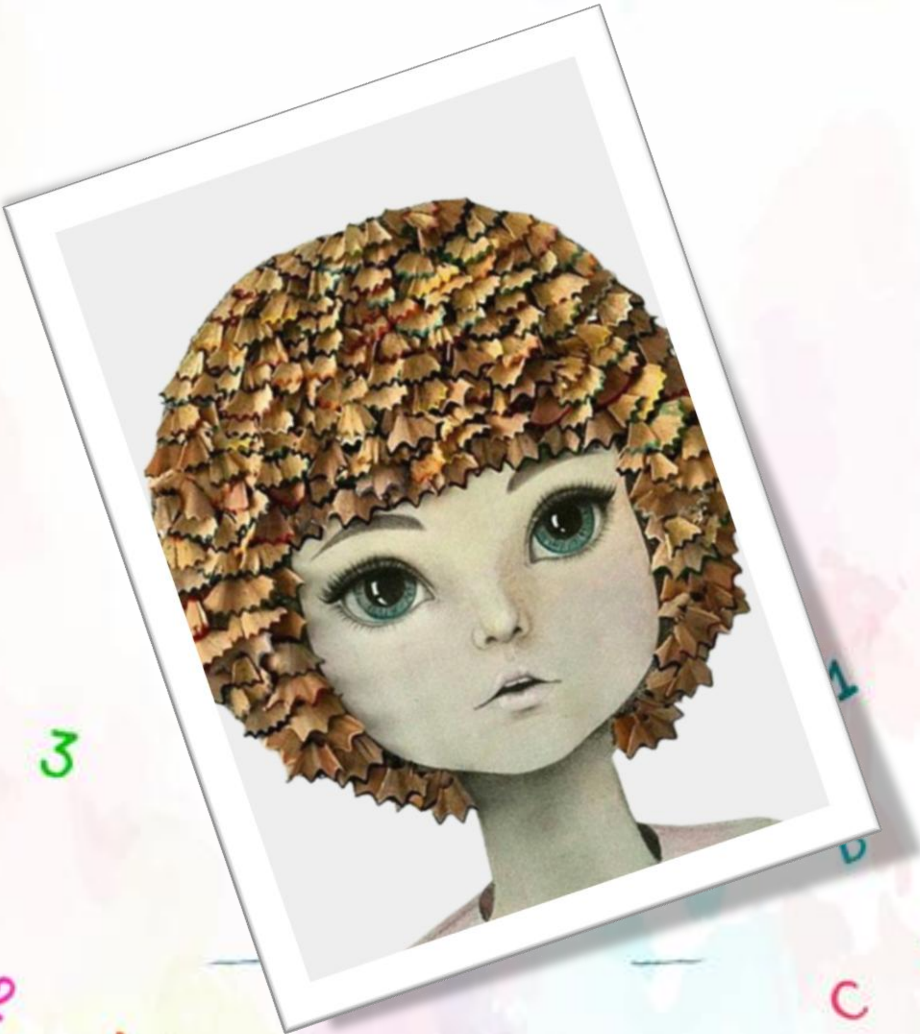
भास्कर न्यूज,मंडला।

जिला स्तरीय बांस एवं काष्ठ हस्तशिल्प प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। दो दिवसीय इस प्रदर्शनी में बांस और काष्ठ से बनाये गये फर्नीचर, दैनिक उपयोग एवं आर्चीस सामग्री का प्रदर्शन किया गया। 30 एवं 31 मार्च को बीआरसी भवन पालिटेकनिक कॉलेज के पास आयोजित इस प्रदर्शनी में अवलोकन के लिए जिला पंचायत अध्यक्ष संपतिया उइके, सीईओ प्रबल सिपाहा पहुंचे।

बताया गया है कि यह प्रदर्शनी वुडराक इंटीरियर डिजाइनर के द्वारा लगाई गई है। इस प्रदर्शनी में राज्य एवं राष्ट्रपति हस्तशिल्प पुरस्कार प्राप्त राजेन्द्र सिंह कुशवाहा भी मौजूद रहे। प्रदर्शनी के आयोजक मनीष कुमार ने बताया कि मंडला जिले के बैगा जनजाति के लोगो ने हस्तशिल्प से सामग्री बनाई है। इसमें आकर्षक सोफा, डाइनिंग टेबिल, मोमबत्ती स्टेंड, गणेश प्रतिमा के अलावा अन्य सामग्री शामिल है।


BANDA
(Uttar Pradesh)
N
HAMIRPUR
FATEHPUR
MAHOBA
CHITRAKUT
MADHYA PRADESH
Yamuna
Chandwara
Jaspura
Pailani
Palra
Tindwari
Marka
Ingua
Paprenda
Beberu
BANDA
Khairar
Murwal
Kamasin
Khurhand
Bisenda
Oran
Girwan
Atarra
Narani
To Maudaha
To Mahoba
To Sitapur Muafi
76
Map not to Scale
National Highway
District Boundary
River
State Highway
Road
Railway Track
District Headquarter
Taluk Headquarter
Town

“एक चित्र हज़ार शब्दों के बराबर होता है”





ISBN 978-93-340-0099-3
9 789334 000993